ऋषि दयानन्द सरस्वती

महर्षि ऐतरेय महीदास

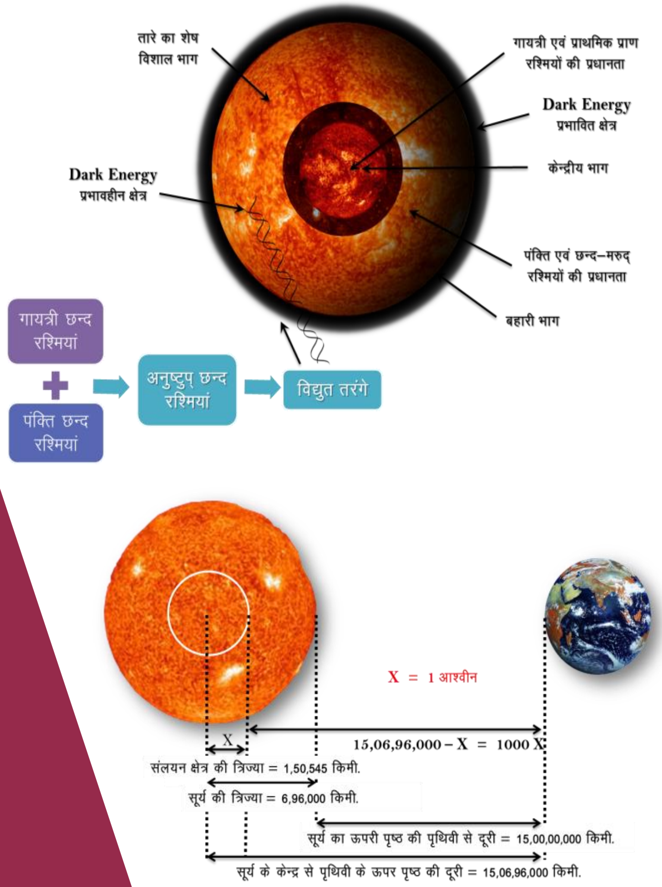

वैदिक भौतिकी अनुसंधान परिचय

संशोधित एवं परिवर्धित

माननीय डॉ. सत्यपाल सिंह जी, मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री, भारत सरकार को 'वेदविज्ञान-आलोकः' ग्रन्थ भेंट करते हुए

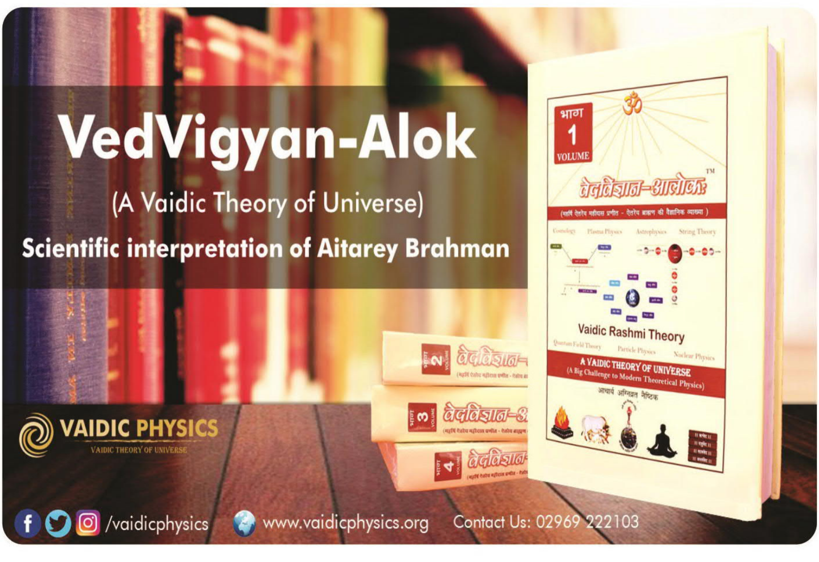

ओ३म्

वैदिक भौतिकी अनुसंधान परिचय

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास
वेद विज्ञान मन्दिर
(वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान)
भागलभीम, भीनमाल (जालोर) - 343029

तृतीय संस्करण

वर्ष 2019

कार्तिक कृष्णा अमावस्या, शारदीय नवसस्येष्टि (दीपावली), महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस

विक्रम संवत् २०७६
27-10-2019

संख्या - 1000

सहयोग - गम्भीरता से पढ़कर स्वयं निश्चित करें।

प्रकाशक
श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास
वेद विज्ञान मन्दिर
(वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान)
भागलभीम, भीनमाल (जालोर) - 343029
ई–मेल : swamiagnivrat@gmail.com
वेबसाईट : vaidicphysics.org
सम्पर्क सूत्रः - 02969 222103, 9829148400

सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन सुरक्षित

अनुक्रमणिका

1.	वैदिक भौतिक विज्ञान अनुसंधान संस्थान का संक्षिप्त परिचय	1
2.	हमारे उद्देश्य एवं शोधकार्य के विषय	7
3.	अनुसंधान के उद्देश्य	11
4.	विश्व में वेद व विज्ञान के शोधकार्य	15
5.	वर्तमान सैद्धान्तिक भौतिक विज्ञान एवं आचार्य जी के समक्ष चुनौती	27
6.	आएं चलें - बौद्धिक स्वतंत्रता की ओर	30
7.	ऐतरेय ब्राह्मण का भाष्य क्यों?	34
8.	'वेदविज्ञान-आलोक' ग्रन्थ की महती उपादेयता	35
9.	आचार्य जी का कार्य मेरी दृष्टि में	39
10.	निरुक्त का भाष्य क्यों?	40
11.	सोशल मीडिया से प्राप्त कुछ महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ	46
12.	संस्थान के आधार	53
13.	विनम्र निवेदन	58
14.	विशेष निवेदन	59

" मैं वैदिक विज्ञान के द्वारा एक अखण्ड, सुखी व समृद्ध भारत के निर्माण की आधारशिला रखने का प्रयास कर रहा हूँ, जिसमें प्रत्येक भारतीय तन, मन, विचारों व संस्कारों से विशुद्ध भारतीय होगा। उसके पास अपना विज्ञान वेदों, ऋषियों व देवों के प्राचीन विज्ञान पर आधारित एवं अपनी भाषा हिन्दी व संस्कृत में होगा। उसे अपने पूर्वजों की प्रतिभा, चरित्र एवं संस्कारों पर गर्व होगा, उसे पाश्चात्य विद्वानों की बौद्धिक दासता से मुक्ति मिलेगी, जिससे लार्ड मैकाले का वर्तमान में साकार हो चुका स्वप्न ध्वस्त हो सकेगा। यह प्यारा राष्ट्र पुनः विश्वगुरू बनकर विश्व को शान्ति एवं आनन्द का मार्ग दिखाएगा।

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

" मैं वेद को वर्तमान विज्ञान के पीछे नहीं, बल्कि वर्तमान विज्ञान को वेद पीछे चलाने की भावना रखता हूँ और मुझे विश्वास है कि मैं ऐसा कर पाऊंगा।

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

1. वैदिक भौतिक विज्ञान अनुसंधान संस्थान का संक्षिप्त परिचय

इस संस्थान का संचालन एक पंजीकृत न्यास (ट्रस्ट) **श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास** द्वारा किया जा रहा है। इस न्यास की स्थापना पूज्य श्री आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक ने राजकोट (गुजरात) के पूज्य आचार्य (स्वामी) श्री धर्मबन्धु जी के परामर्श व सहयोग से वैशाख अमावस्या वि.सं. २०६० तदनुसार 01-05-2003 को आर्य समाज मंदिर, भीनमाल में की। कुछ कालोपरान्त इसमें मथुरा के पूज्य आचार्य श्री स्वदेश जी भी सहयोगी बने। ये दोनों ही विद्वान् अनेक वर्ष तक इस न्यास के प्रधान संरक्षक व संरक्षक रहे। इसका ट्रस्ट डीड दिनांक 02-07-2003 को उप पंजीयक, भीनमाल (जालोर) के द्वारा पंजीकृत हुआ। इस ट्रस्ट का पंजीकरण देवस्थान विभाग, राजस्थान सरकार के द्वारा दिनांक 28-12-2011 को किया गया, जिसका पंजीकरण क्रमांक 06/2011/जालोर है। इस ट्रस्ट की वार्षिक ऑडिट रिपोर्ट चार्टेड एकाउण्टेन्ट द्वारा करवाकर आयकर विभाग, भारत सरकार एवं देवस्थान विभाग, राजस्थान सरकार को नियमित भेजी जाती है। आयकर विभाग ने इस संस्था के दिये गये दान पर आयकर अधिनियम 1961 की धारा सं. 80 जी के अन्तर्गत सन् 2005 से छूट प्रारम्भ की, जिसे 1 अप्रैल 2010 से स्थायी किया गया है। यह ट्रष्ट नीति आयोग में भी पंजीकृत है, जिसकी unique id, RJ/2018/0188356 है।

इस न्यास के संविधान के अनुसार इसके निम्नलिखित पांच प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किये गये।

1. **वेद रक्षा अभियान**
2. **गो-कृषि-पर्यावरण रक्षा अभियान**
3. **राष्ट्र रक्षा अभियान**
4. **समाज सुधार अभियान**
5. **आर्य वीर दल अभियान**

इन अभियानों के संचालन का प्रारम्भ अक्टूबर 2004 से पाली-मारवाड़ नगर में एक किराये के मकान में किया गया। तदुपरान्त इसका मुख्यालय भीनमाल नगर में एक किराये के मकान में स्थानान्तरित किया गया। उधर ट्रस्टियों व अन्य दानदाताओं के सहयोग से भीनमाल नगर के निकट भागलभीम ग्राम में सवा तीन बीघे भूमि क्रय करके वेद विज्ञान मंदिर (वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान) नामक संस्थान का निर्माण किया। इस भवन में जून 2008 से मुख्यालय स्थानान्तरित हो गया।

ध्यातव्य है कि इस भूमि का क्रय जुलाई 2005 में कर लिया गया था। इस न्यास में कुल 39 ट्रस्टी तथा संरक्षक मण्डल में अनेक प्रतिष्ठित नागरिक भी जुड़े हुए हैं। इस संस्थान के प्रमुख के साथ-2 आचार्य पद का भी दायित्व श्री आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक के पास है।

आचार्य जी की बचपन से ही भौतिक विज्ञान में गहरी रुचि रही है, विशेषकर भौतिकी के मूल एवं गम्भीर विषयों में। महर्षि दयानन्द सरस्वती के दृढ़ अनुयायी के रूप में वेद एवं ऋषियों के प्रति उनकी निष्ठा स्वाभाविक है। उन्होंने वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान के अनुसंधान की परिस्थिति व परम्परा को गहराई से देखा व समझा है। इन दोनों ही क्षेत्रों की भूलों व समस्याओं पर गहन चिन्तन किया है। वे वेद विज्ञान सम्बन्धी राष्ट्रिय व अन्तर्राष्ट्रिय वेद गोष्ठियों में वर्षों से भाग लेते रहे हैं।

वर्तमान भौतिक विज्ञान की समस्याओं पर उनका संवाद अनेक वर्ष तक जिन वैज्ञानिकों से होता रहा है, निम्नलिखित हैं-

1. **प्रो. आभास कुमार मित्रा,** विश्व प्रसिद्ध खगोलशास्त्री, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (BARC), मुम्बई, एड. प्रो. होमी भाभा नेशनल इंस्टीट्यूट, मुम्बई।
2. **प्रो. नाभा के. मण्डल,** सीनियर प्रोफेसर एवं प्रवक्ता, इण्डिया बेस्ड न्यूट्रिनो ऑब्जर्वेट्री, डिपार्टमेंट ऑफ हायर एनर्जी फिजिक्स, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फण्डामेण्टल रिसर्च (TIFR)।

3. **प्रो. ए. आर. राव,** डिपार्टमेंट ऑफ एस्ट्रोफिजिक्स एण्ड एस्ट्रोनॉमी (TIFR), मुम्बई।
4. **प्रो. नरेन्द्र भण्डारी,** ऑनरेरी सायंटिस्ट, इण्डियन नेशनल सायंस एकेडमी।
5. **प्रो. के. सी. पोरिया,** प्रोफेसर विभागाध्यक्ष भौतिक विज्ञान, दक्षिण गुज. विश्वविद्यालय, सूरत।
6. **प्रो. वसन्त कुमार मदनसुरे,** से. नि. इंजीनियरिंग विभागाध्यक्ष व प्रोफेसर, अकोला कृषि विद्यापीठ। [ये हमारे ट्रस्टी भी हैं]
7. **प्रो. अशोक अम्बास्था,** सौर वैज्ञानिक, सोलर ऑब्जर्वेट्री (PRL), उदयपुर।
8. **प्रो.पंकज जोशी,** सीनियर प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ एस्ट्रोफिजिक्स एण्ड एस्ट्रोनॉमी (TIFR), मुम्बई।
9. **पद्मभूषण प्रो. अजीतराम वर्मा,** से. नि. डायरेक्टर, नेशनल फिजीकल लैबोरेटरी, नई दिल्ली।
10. **डॉ. एम. पी. चचेरकर,** डायरेक्टर, डिफैंस लैबोरेटरी, जोधपुर।
11. **प्रो. एस. डी. वर्मा,** से. नि. डायरेक्टर, स्कूल ऑफ सायंस, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, से. नि. असि. प्रो. एस्ट्रोफिजिक्स लुईजियाना विश्वविद्यालय, USA ।
12. **डॉ. जे. सी. व्यास,** भौतिक वैज्ञानिक, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (BARC), मुम्बई।
13. **डॉ. स्वप्न कुमार दास,** भौतिक वैज्ञानिक, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (BARC), मुम्बई।
14. **प्रो. एम. एम. बजाज,** से. नि. प्रो. एवं चीफ ऑफ मेडि–फिजिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय ।
15. **प्रो. जयेश देशकर,** प्रो. वाइस चांसलर, दक्षिण गुज. विश्वविद्यालय, सूरत।
16. **अशोक कुमार शर्मा,** वैज्ञानिक 'जी' एवं प्रभाग प्रमुख, संचार और सूचना प्रोद्यौगिकी मंत्रालय, इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रोद्यौगिकी विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली।
17. **डॉ. प्रवीर अस्थाना,** हैड, मेगा सायंस प्रोजेक्ट, डिपार्टमेंट ऑफ सायंस एण्ड टेक्नोलॉजी, भारत सरकार, नई दिल्ली।

18. **प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय,** स्पेस साइंटिस्ट एवं वैदिक वैज्ञानिक, पूर्व निदेशक अनुसंधान विभाग, इसरो।

अभी हाल में ही प्रो. रामगोपाल (पूर्व निदेशक DRDO), डॉ. वेदप्रकाश आर्य (रीजनल कॉलेज, अजमेर), स्वीडन में भौतिकी के प्रोफेसर डॉ. संदीप कुमार सिंह, डॉ. सतेन्द्र कटारिया (वरिष्ठ वैज्ञानिक जर्मनी) एवं उनके अनेक सहयोगी युवा वैज्ञानिक जुड़े हैं, जो न केवल शोध में रुचि ले रहे हैं, अपितु उनमें से कुछ आर्थिक सहयोग भी कर रहे हैं।

इन वैज्ञानिकों के साथ वर्षों के संवाद से आचार्य जी अनुभव करते हैं कि आधुनिक भौतिकी Cosmology, Particle physics, String theory, Astrophysics, Quantum field theory, Space, time आदि क्षेत्रों में अनेक गम्भीर समस्याओं से ग्रस्त है। इधर उन्होंने वैदिक वाङ्मय का स्वयमेव अध्ययन किया, तो उन्हें अनुभव हुआ कि इस दिशा में **संसार में अब तक के अनुसंधान की प्रणाली सर्वथा दोषपूर्ण है, जिसके कारण न केवल भारत, अपितु विश्व में अनेक सामाजिक समस्याओं का जन्म हुआ है।**

आचार्य जी ने अभी हाल में **ऋग्वेद** के ब्राह्मण **ऐतरेय ब्राह्मण** का वैज्ञानिक भाष्य **"वेदविज्ञान-आलोक"** नाम से सम्पन्न किया है, जो 'वेदविज्ञान-आलोकः' नाम से बड़े आकार के 2800 पृष्ठों में कुल चार भागों में प्रकाशित हुआ है। इस विशाल ग्रन्थ का विमोचन **भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम श्री एम. वेंकैया नायडू** ने 20 जून 2018 को किया था। इस **अति पुरातन ग्रन्थ का वैज्ञानिक भाष्य सम्भवतः विश्व में सर्वप्रथम उन्होंने ही किया है,** हमारी जानकारी के अनुसार ऐसा विश्वास है। **इस भाष्य के विषय में हमारा विश्वास है कि यह ग्रन्थ न केवल संसार भर के वेद अध्येताओं के लिये एक अभूतपूर्व मार्गदर्शक का कार्य करेगा, अपितु वर्तमान Theoretical physics के उपर्युक्त विभिन्न क्षेत्रों की गम्भीर समस्याओं का दूरगामी एवं स्थायी समाधान करने में सक्षम होगा,** जिसकी चर्चा आगे की जायेगी।

अक्टूबर 2004 से आचार्य जी ने वैदिक ज्ञान विज्ञान पर एकाकी शोध कार्य प्रारम्भ किया था। **संस्थान प्रमुख एवं अवैतनिक आचार्य के रूप में उन्होंने बिना किसी मार्गदर्शन के ऐतरेय ब्राह्मण का वैज्ञानिक भाष्य किया है, इस ग्रन्थ के आधार पर आचार्य जी ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के विज्ञान संकाय में "Recent Development in Cosmology" विषय पर आयोजित राष्ट्रिय कांफ्रेंस में अपनी Vaidic Theory of Universe को सर्वप्रथम अप्रैल 2018 में प्रस्तुत किया। इसके पश्चात् विज्ञान संकाय, राजधानी कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली में भी इसी थ्योरी पर व्याख्यान दिए। इस समय आचार्य जी वेदों को समझने के लिए 'निरुक्त' नामक अति महत्वपूर्ण ग्रन्थ का वैज्ञानिक भाष्य कर रहे हैं। यह ग्रन्थ 'वेदविज्ञान-आलोकः' नामक ग्रन्थ के साथ मिलकर न केवल वेदों पर हो रहे विश्व भर के सभी आक्रमणों को ध्वस्त करने में समर्थ होगा, अपितु वेदों व ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रति विश्व की दृष्टि को बदल कर रख देगा तथा वैदिक ज्ञान विज्ञान का अभूतपूर्व गौरव होगा। इस कार्य में सहयोग के लिए युवा स्टाफ कार्यरत रहता है।** पूर्व में कार्य का विस्तार कम था परन्तु धीरे-२ कार्य में वृद्धि होने पर हमारे स्टाफ की वृद्धि होती गयी। समस्त स्टाफ संस्था परिसर में ही रहता है, इस कारण समस्त स्टाफ के मानदेय के अतिरिक्त भोजन, आवास, विद्युत्-पानी एवं दैनिक उपभोग की वस्तुएं, निःशुल्क प्रदान की जाती हैं। संस्था में अतिथियों के भोजन व आवास की व्यवस्था भी की जाती है। आचार्य जी के कार्य को सोशल मीडिया के माध्यम से जानकर विज्ञान के अनेक प्रतिभाशाली छात्र वैदिक विज्ञान की ओर आकृष्ट हो रहे हैं। वे यहाँ रहकर आचार्य जी के मार्गदर्शन में अध्ययन, शोध वा प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते हैं, परन्तु यहाँ इसके लिए समुचित भवन एवं अन्य आर्थिक संसाधन उपलब्ध नहीं है।

इस संस्था में शोधकार्य के अतिरिक्त पर्यावरण शुद्धि हेतु दैनिक यज्ञ, वेदोपदेश, सत्संग, समाज सुधार कार्य, वेद एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान संगोष्ठी, सम्मेलन आदि गतिविधियां सम्मिलित हैं। हमारा लक्ष्य संस्था को अर्न्तराष्ट्रिय स्तर पर भौतिक विज्ञान के क्षेत्रों

में वैदिक विज्ञान के द्वारा नई दिशा देकर वेद तथा प्राचीन ऋषि मुनियों के साथ-2 सम्पूर्ण भारत को प्रतिष्ठा दिलाना तथा भारत के प्रख्यात विश्वविद्यालयों, प्रसिद्ध वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थानों तथा टी. वी. चैनलों पर वैदिक विज्ञान का प्रचार करना है। इसके साथ ही आचार्य जी के पूर्व में लिखे गये साहित्य एवं अन्य आर्य विद्वानों के साहित्य वा ऋषिकृत ग्रन्थों का प्रचार प्रसार करना हमारी योजना का एक अंग है। इस हेतु वांछित संसाधनों की आवश्यकता है। हमारा उद्देश्य है कि यह संस्थान "महर्षि ऐतरेय महीदास वैदिक विज्ञान अध्ययन एवं अनुसंधान केन्द्र" के रूप में विश्व स्तरीय शोध संस्थान बने, इसके लिए बहुत धन की आवश्यकता होगी। इस हेतु भारत सरकार के सहयोग से इस संस्थान को इस लक्ष्य हेतु विकसित करना चाहते हैं, क्योंकि इस स्तर का कार्य कोई प्राईवेट न्यास (ट्रस्ट) अपनी सीमित शक्ति व संसाधनों के बल पर नहीं कर सकता।

वर्तमान कार्य

1. निरुक्त का वैज्ञानिक भाष्य पूज्य आचार्य जी के द्वारा किया जा रहा है।
2. निरुक्त का यह भाष्य अन्य उपलब्ध भाष्यों से सर्वथा विशिष्ट होगा, जो वेद एवं ब्राह्मण ग्रन्थों के गम्भीर वैज्ञानिक रहस्यों को खोलने में आधार का कार्य करेगा।
3. वैदिक विचारधारा, विशेषकर भौतिकी का सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचार किया जा रहा है।
4. विश्वविद्यालयों में वैदिक रश्मि सिद्धान्त पर व्याख्यान।
5. वेदादि शास्त्रों पर लगाये जा रहे मिथ्या आरोपों का सशक्त उत्तर देना।
6. जिज्ञासु युवकों की शंकाओं का समाधान।

2. हमारे उद्देश्य एवं शोधकार्य के विषय

ऐतरेय ब्राह्मण के वैज्ञानिक व्याख्यान के द्वारा हम निम्नलिखित विषयों पर वर्तमान भौतिकी को नई दिशा दे सकेंगे-

1. **Cosmology-** सृष्टि उत्पत्ति के प्रारम्भ से लेकर तारों के निर्माण तक की प्रक्रिया का विस्तृत विज्ञान। वास्तविक डार्क मैटर व डार्क एनर्जी की उत्पत्ति, संरचना एवं क्रियाविज्ञान। आचार्य जी की Vaidic Rashmi Theory of Universe आधुनिक भौतिकी की Big Bang theory, Eternal Universe theory, Big Bang Cycle आदि सभी की गम्भीर समीक्षा करती हुई सबके दोषों को दूर करने वाली अभूतपूर्व थ्योरी है, जिससे ब्रह्माण्ड को समझने की सर्वथा दिव्य कुंजी प्राप्त हो सकेगी।

2. **Astrophysics-** तारों व ग्रहों के निर्माण का प्रारम्भ, उनकी सम्पूर्ण संरचना, संचालन, परिक्रमण, घूर्णन आदि का विस्तृत क्रियाविज्ञान। गैलेक्सियों का निर्माण, तारों व ग्रहों आदि की कक्षाओं के निर्माण की प्रक्रिया। तारों के केन्द्रीय भागों में होने वाली नाभिकीय संलयन का विशेष क्रिया विज्ञान।

3. **Particle Physics-** मूलकणों व क्वाण्टाज् का निर्माण व संरचना, Atoms व Molecules का निर्माण।

4. **Quantum Field Theory-** विभिन्न विद्युत् आवेशित अथवा निरावेशित कणों एवं क्वाण्टाज् आदि के मध्य interaction का विस्तृत क्रिया विज्ञान। so called virtual (mediator) particles की संरचना व क्रिया विज्ञान। Vaidic Rashmi Theory of Universe में बलों के स्वरूप व क्रिया विज्ञान का वह वर्णन है, जिसे पढ़कर वर्तमान भौतिक विज्ञानी हतप्रभ रह जाएंगे। gravity, mass, electric charge आदि का स्वरूप, उसका कारण व क्रियाविज्ञान।

5. **String Theory-** इसके स्थान पर हम **वैदिक छन्द एवं प्राण रश्मि सिद्धांत** (Vaidic Chhand and Pran Rashmi Theory) का विस्तृत एवं अभूतपूर्व क्रियाविज्ञान प्रस्तुत करेंगे। इससे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के विज्ञान को सर्वथा नवीन परन्तु वस्तुतः वैदिक सनातन दिशा प्राप्त होगी। gravitons का स्वरूप, संरचना एवं क्रियाविज्ञान।

6. **Plasma Physics-** तारों के अन्दर होने वाली विभिन्न गतिविधियों का विज्ञान।

7. **ईश्वर तत्व विज्ञान-** सम्पूर्ण सृष्टि के निर्माण, संचालन एवं प्रलय आदि में ईश्वर के अस्तित्व एवं स्वरूप की वैज्ञानिकता, उसका सम्पूर्ण क्रियाविज्ञान। यह विज्ञान वर्तमान भौतिक शास्त्रियों के साथ विश्व के अति प्रबुद्ध धर्माचार्यों के लिये अति आश्चर्य का विषय होगा। इससे अध्यात्म के साथ-२ भौतिकी की भी दिशा बदल जाएगी।

8. संसार में भाषा एवं ज्ञान की उत्पत्ति का विशिष्ट विज्ञान, वेद तथा उसके भाष्य का यथार्थ स्वरूप। इससे संसार के वेदानुसंधाताओं की दिशा सर्वथा बदल जायेगी और उन्हें ऋषियों की पुरातन व सनातन वैज्ञानिक परम्परा का बोध होगा।

9. ब्राह्मण ग्रन्थों एवं वेद के विषय में संसार में प्रचलित भ्रान्तियों का निवारण।

10. काल (Time) एवं आकाश (Space) का स्वरूप एवं क्रिया विज्ञान। यह विषय वर्तमान भौतिक शास्त्रियों के साथ-२ उच्च कोटि के दार्शनिकों के लिए भी कुतूहल का विषय होगा।

ध्यातव्य है कि अनेक महानुभाव हमारे समक्ष प्रश्न उपस्थित करते हैं कि क्या हमें अपने अनुसंधान कार्य हेतु किसी प्रयोगशाला की आवश्यकता नहीं होगी? इस विषय में हमारा निवेदन है कि हमारा शोधकार्य ऐसा नहीं है, जिसका प्रयोग किसी विद्यालय,

महाविद्यालय वा सामान्य विश्वविद्यालय की भौतिकी की प्रयोगशाला में किया जा सके। वस्तुतः हमारा कार्य उससे बहुत उच्चतर स्तर का है, जिस स्तर के प्रयोग विश्व की सबसे बड़ी प्रयोगशाला CERN में विश्व के वैज्ञानिक करते हैं। इस प्रयोगशाला का निर्माण संसार के तीस देशों ने मिलकर किया है। तब कोई विचारे कि क्या हम ऐसी प्रयोगशाला बना सकते हैं? हाँ, हमारा यह उद्देश्य रहेगा कि आचार्य जी के शिष्य श्री विशाल आर्य (अग्नियश वेदार्थी), जो सैद्धान्तिक भौतिक विज्ञान में दिल्ली विश्वविद्यालय से M.Sc. हैं, एवं अन्य युवा वैज्ञानिक छात्र भारत के बड़े-२ संस्थानों में जाकर उनकी प्रयोगशालाओं का यथासम्भव लाभ प्राप्त करें। अनुकूलता हो तो आचार्य जी भी कभी-२ साथ रहें। सुदूर भविष्य में इन्हें CERN में जाने का भी अवसर मिले, यह भावना है। इतने पर भी हम यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक समझते हैं कि वर्तमान विज्ञान की प्रयोगशालाओं में सम्पूर्ण वैदिक भौतिकी को प्रयोगात्मक रूप नहीं दिया जा सकता। उनकी अपनी तकनीकी सीमाएं हैं, जिन्हें उच्च स्तरीय वैज्ञानिक ही समझ सकते हैं, सामान्य भावुक जनों वा वर्तमान भौतिकी के सामान्य विद्वानों को यह बात सहसा समझ में नहीं आएगी। वस्तुतः वर्तमान वैज्ञानिकों के पास ऐसी कोई तकनीक उपलब्ध नहीं है, जो हमारे वैदिक विज्ञान को ग्रहण कर सके। वस्तुतः हमारा विज्ञान विशुद्ध सैद्धान्तिक है, जो वर्तमान सैद्धान्तिक भौतिकी की अपेक्षा भी अत्यधिक सूक्ष्म है। उधर वर्तमान गणित भी हमारे विज्ञान की सीमाओं के पूर्व ही समाप्त हो जाता है। भविष्य में विश्व के वैज्ञानिक इस दिशा में कुछ प्रयास कर सकते हैं। हमारा विज्ञान उन्हें ऐसे अनेक अवसर उपलब्ध कराएगा। एक बात यह भी महत्व की है कि आचार्य जी सैद्धान्तिक वैदिक भौतिक वैज्ञानिक हैं। इस पर प्रयोग, विशुद्ध गणित व तकनीक का विकास करना उनका ही दायित्व नहीं है और न ऐसा करना आवश्यक ही है, क्योंकि सब कुछ गणित, प्रयोग व प्रेक्षण से ही नहीं जाना जा सकता। जब तक प्रयोग, गणित व प्रेक्षणों में यथार्थ तार्किकता व प्रबल ऊहा का समावेश नहीं होगा, तब वे भी अशुद्ध वा मिथ्या परिणाम ला सकते हैं। इसके लिए युवा प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों को चाहिए कि आचार्य जी से वैदिक भौतिकी का अध्ययन करके अपनी प्रतिभा से गणित, प्रयोग व प्रक्षेणों का विकास करें, सब कुछ आचार्य जी नहीं कर

सकते। इसके लिए प्रसिद्ध अमेरिकी वैज्ञानिक रिचर्ड पी. फाइनमैन का कथन पठनीय है–

"There are theoretical physicists who imagine, deduce and guess at new laws, but do not experiment, and there are experimental physicist who experiment, imagine, deduce and guess."

(Lectures on Physics- P.2)

अर्थात् सैद्धान्तिक भौतिकविद् कल्पना, अनुमान से निष्कर्ष प्राप्त करता है, वह प्रयोग नहीं करता। उधर प्रायोगिक भौतिक शास्त्री उन कल्पनाओं, अनुमान आदि को प्रायोगिक रूप देता है।

जो हर समय गणित व प्रयोगों की ही हठ करते हैं वे कुछ प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के इन कथनों को पढ़ने का कष्ट करें–

"But mathematical definitions can never work in the real world. A mathematical definition will be good for mathematics, in which all the logic can be followed out completely, but the physical world is complex."

(Lectures on Physics- P.148)

अर्थात् गणितीय व्याख्याएं कभी भी वास्तविक संसार में कार्य नहीं करतीं। ये व्याख्याएं गणित के लिए तो अच्छी हैं, जहाँ ये व्याख्याएं पूर्णतः तर्क का अनुसरण करती हैं परन्तु भौतिक संसार बहुत जटिल है।

उधर महान् वैज्ञानिक सर अल्बर्ट आइंस्टीन इस विषय में कहते हैं–

As far as the laws of mathematics refer to reality, they are not certain, as far as the certain, they do not refer to reality. (Source - Web)

(जहाँ तक गणित के नियम वास्तविकता को दर्शाते हैं, वे निश्चित नहीं होते, जहाँ तक वे निश्चित होते हैं, वे वास्तविकता को नहीं दर्शाते)

3. अनुसंधान का उद्देश्य

पूर्वोक्त विस्तृत बिन्दुओं पर एक साथ अनुसंधान आचार्य जी के 'वेदविज्ञान-आलोकः' ग्रन्थ का आश्चर्यजनक पक्ष है। इससे विविध क्षेत्रों में निम्नानुसार प्रभाव पड़ेंगे-

1. **वैज्ञानिक क्षेत्र-** इससे **वर्तमान विज्ञान की अनेक अनसुलझी समस्याओं का समाधान करने में अपूर्व मार्गदर्शन मिलेगा। आचार्य जी एवं श्री विशाल आर्य का मत है कि वर्तमान विश्व में भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में स्थापित माने जा रहे अनेक सिद्धान्तों में अनेक न्यूनताएं हैं। इन न्यूनताओं वा अपूर्णताओं के रहते जो भी टैक्नोलॉजी का विकास हो रहा है, वह कहीं न कहीं प्राणिजगत् व पर्यावरण को हानि पहुंचा रहा है।** वर्तमान विश्व पर्यावरण प्रदूषण के संकट से तो चिन्तित है, परन्तु उसके मूल कारण तक पहुंचने में यह सभ्य वा वैज्ञानिक समाज असमर्थ ही प्रतीत हो रहा है। केवल स्थूल कारणों पर चर्चा एवं उसके निवारण के कुछ उपाय करने मात्र से समस्या का स्थायी एवं बहुआयामी निवारण सम्भव नहीं है। एक रोग की औषधि दूसरे रोग को जन्म दे रही है, ऐसी स्थिति सर्वत्र देखी जा रही है। आज भूमि, जल, वायु, आकाश ही नहीं, अपितु समष्टि मनस्तत्त्व भी प्रदूषित हो रहा है, जिससे न केवल प्राकृतिक प्रकोपों की संख्या व तीव्रता बढ़ रही है, अपितु शरीर व मन में नाना प्रकार के रोग उत्पन्न होकर नाना प्रकार के अपराध सम्पूर्ण विश्व में बढ़ते जा रहे हैं। **स्टीफन हॉकिंग जैसा विश्वविख्यात भौतिक वैज्ञानिक एक सौ वर्ष पश्चात् इस पृथ्वी पर मानव का अस्तित्व समाप्त हो जाने की चेतावनी देते संसार से चला गया। कोई नहीं सोच रहा कि इस भयंकर अभिशाप की उत्तरदायी यह वर्तमान टैक्नोलॉजी, भोगवादी विकास की खतरनाक प्रवृत्ति एवं मांसाहार ही है। अभी तो सभी सुविधा भोगने का सुख लूटने में मस्त हैं, भावी विनाश का जरा भी भय वा भान नहीं है।** हमारा मत है कि वैदिक विज्ञान से सुदूर भविष्य में ऐसी टैक्नोलॉजी का जन्म हो सकता है, जो पूर्ण निरापद होगी। वैदिक काल में हमारे ऋषियों, देवों, असुरों, गन्धर्वों आदि के पास ऐसी ही निरापद टैक्नोलॉजी थी, क्योंकि उस समय

वैदिक भौतिकी का साम्राज्य था। आज के प्रबुद्ध वर्ग को रामायण व महाभारत की टैक्नोलॉजी कल्पना प्रतीत होती है। आचार्य जी के भाष्य से उन्हें अपनी भ्रान्ति का अनुभव हो सकेगा।

2. **अध्यात्म क्षेत्र–** वैदिक विद्या के प्रतिष्ठित होने से मनुष्य की प्रवृत्ति भोगवाद से हटकर अध्यात्म की ओर होने से टैक्नोलॉजी की आवश्यकता भी न्यून हो सकेगी। इस थ्योरी से विश्वभर के अध्यात्मवादियों को भी एक नई दिशा मिलेगी। ईश्वर का वास्तविक एवं वैज्ञानिक स्वरूप तथा वह इस सृष्टि का निर्माण, संचालन, प्रलय आदि को कैसे सम्पन्न करता है अर्थात् उसका क्रियाविज्ञान कैसा है? यह विशेष रूप से समझा जा सकेगा। इससे संसार के सम्प्रदायों को अपने-2 विचारों की वैज्ञानिक ढंग से समीक्षा स्वयं करने का अवसर मिलेगा, फलस्वरूप मानव एकता एवं विश्वबन्धुत्व की भावना को बल मिलेगा। अवैज्ञानिकता का त्याग एवं वैज्ञानिकता का ग्रहण करने की सब मनुष्यों को प्रेरणा मिलेगी। इससे सम्पूर्ण विश्व वैदिक स्वर्णिम काल की भाँति एक धर्म, एक भाषा एवं एक भावना के मार्ग की ओर प्रवृत्त होगा। आचार्य जी के इस कार्य से साम्प्रदायिक वैमनस्य, आतंकवाद एवं हिंसा की प्रवृत्ति का निरोध करने में आधारभूत सहयोग प्राप्त होगा।

3. **सामाजिक क्षेत्र–** वेदादि शास्त्रों के मिथ्या अर्थों के कारण इस विश्व में अनेक सामाजिक समस्याएं यथा- जातिवाद, छूआछूत, नारी-शोषण, साम्प्रदायिकता, मांसाहार, पशुबलि, नरबलि, नशा, यौन उच्छ्रंखलता, अशिक्षा, प्रमाद, अराष्ट्रियता, हिंसा आदि दुर्गुण उत्पन्न हुए वा होते रहे हैं। इस विज्ञान के प्रकाश में आने से वेदादि शास्त्रों का एक ऐसा उच्च वैज्ञानिक स्वरूप प्रकट होगा, जिससे ये सामाजिक एवं साम्प्रदायिक समस्याएं स्वयमेव समूल नष्ट हो सकेंगी। आज देश में कुछ प्रबुद्ध संगठन वेद में आर्यों व दस्युओं के युद्ध की बात करके कथित सवर्णों को विदेशी बताकर देश में गृहयुद्ध का बीजारोपण कर रहे हैं। वेदादि शास्त्रों, ऋषियों, देवों की निन्दा कर रहे हैं, उन्हें आचार्य जी के ग्रन्थ से अपनी अज्ञानता का बोध हो सकेगा एवं वे भी वेद के भक्त

बन सकेंगे, साथ ही सामाजिक समरसता का वैज्ञानिक आधार सबको विदित हो सकेगा। संसारभर के मांसाहारी व स्वेच्छाचारिता के पक्षधरों को वैदिक सदाचार व अहिंसा का सुखद एवं वैज्ञानिक स्वरूप विदित हो सकेगा। इससे वर्तमान समाजशास्त्रियों के अन्दर नूतन वैदिक प्रकाश उत्पन्न होगा।

4. **संस्कृत भाषा–** इस कार्य से वैदिक संस्कृत भाषा को ईश्वरीय एवं ब्रह्माण्डीय भाषा सिद्ध किया जा सकेगा, जिससे संस्कृत भाषा को विश्व में प्रतिष्ठा मिलेगी। आर्ष विद्या व संस्कृत के गुरुकुलों वा विद्यालयों के अन्दर नूतन स्वाभिमान जगेगा और उन्हें तथा परम्परागत वेदपाठियों को संसार में उच्च सम्मान प्राप्त होने का मार्ग प्रशस्त होगा।

5. **राष्ट्रियता व इतिहास–** यद्यपि वेद ब्रह्माण्ड का ग्रन्थ है, पुनरपि वेदादि शास्त्रों को अब तक इस भूमण्डल पर भारतवर्ष ने ही सर्वाधिक सुरक्षित रखा है, इस कारण वैदिक एवं आर्ष ज्ञान विज्ञान पर भारतवर्ष का ही सर्वाधिक अधिकार सिद्ध होता है। **हमारे इस विज्ञान के प्रकाशित होने से भारतवर्ष के पुरातन ज्ञान विज्ञान, संस्कृति, सभ्यता एवं इतिहास को विश्व में प्रतिष्ठा मिलेगी, जिससे भारत अपने जगद्गुरु के पुरातन गौरव को फिर से प्राप्त करने की ओर अग्रसर हो सकेगा।** आज भारतीय इतिहास में अनेक विकृतियां वेदादि शास्त्रों की भाषा व विज्ञान के न समझने के कारण उत्पन्न हुई हैं। वेदादि शास्त्रों में मानव इतिहास को ढूंढने का प्रयास भारतीय इतिहास के प्रदूषण का बहुत बड़ा कारण है। उधर कुछ महानुभाव अपने मिथ्या पाण्डित्य के प्रदर्शन के लोभ में रामायण, महाभारत जैसे ऐतिहासिक महाकाव्यों की आध्यात्मिक वा वैज्ञानिक व्याख्या करके भारतीय इतिहास को नष्ट करते हुए जाने अनजाने में भारत विरोधी कथित प्रबुद्धों का सहयोग करके भारत का दूरगामी विनाश करने में लगे हैं। इस सम्पूर्ण समस्या का दूरगामी व स्थायी समाधान आचार्य जी के अनुसंधान से हो सकेगा। **इससे विश्व के प्रबुद्ध पुरुषों को भारतीय इतिहास, वेद तथा ऋषियों के ग्रन्थों के अध्ययन के प्रति एक नवीन वैज्ञानिक (वस्तुतः सनातन) दृष्टि**

मिलेगी। सभी विदेशी निष्पक्ष विद्वान् भी स्वयं को ऋषियों की सन्तति कहलाने में गौरव अनुभव करेंगे। वे भारतवर्ष (आर्य्यावर्त) देश को अपना सनातन प्रेरक देश मानने के लिए भी समुद्यत होंगे। भारतीय इतिहास पर अनुसंधान करने वालों को एक नवीन दिशा प्राप्त हो सकेगी, क्योंकि उन्हें प्राचीन कथाओं की सम्भाव्यता व असम्भाव्यता को पहचानने की एक अभूतपूर्व वैज्ञानिक कसौटी प्राप्त हो सकेगी। इस अनुसंधान से भारतीय प्रबुद्धों, जो आज सर्वतः बौद्धिक दासता के अभिशाप से ग्रस्त हैं, में बौद्धिक स्वतंत्रता का अप्रत्याशित शंखनाद गूंजने लगेगा।

❝ पहले तो हानिकारक टैक्नोलॉजी के अनुसंधान में भारी धन व समय व्यय होता है, पुनः उसके दुष्परिणामों के अनुसंधान में धन व समय का व्यय किया जाता है। उसके पश्चात् पुनः दूसरी टैक्नोलॉजी के अनुसंधान में ऐसा ही व्यय और ऐसे यह दुश्चक्र सदियों से चल रहा है और वर्तमान में यह घातक टैक्नोलॉजी ऐसे पर्यावरणीय संकट खड़ा कर रही है, जिसके कारण प्राणिमात्र का इस धरती पर रह पाना आगामी 100-200 वर्षों में असम्भव सा हो जायेगा।

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

❝ सृष्टि में विद्यमान सभी प्रकार के सत्य (नित्य) ज्ञान-विज्ञान एवं भाषाओं की उत्पत्ति का मूल स्रोत केवल वेद है। संसार भर के मेरे मित्रो! आइए, हम सब मिलकर वेदों की ओर लौटें और सभी प्रकार के भेदभावों को समाप्त करके संसार को एक ही परमपिता परमात्मा का परिवार मान कर सम्पूर्ण विश्व में सुख-शान्ति व प्रेम का साम्राज्य बनाएं।

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

4. विश्व में वेद व विज्ञान के शोधकार्य

1. वैदिक वाङ्मय के क्षेत्र में हो रहा शोधकार्य- मानव-सृष्टि के प्रारम्भ से ही वेद एक आधार ग्रन्थ रहा है। प्राचीन ऋषियों के वेदों पर व्याख्यान रूप ग्रन्थों को ब्राह्मण ग्रन्थ कहा जाता है। सभी ब्राह्मण ग्रन्थों में ऐतरेय ब्राह्मण सर्वाधिक प्राचीन है। ब्राह्मण ग्रन्थों की भाषा अन्य सभी आर्ष ग्रन्थों की अपेक्षा क्लिष्ट एवं विलक्षण है। इन ग्रन्थों पर भारतवर्ष से बाहर भी अनेक विद्वानों ने भाष्य किये हैं, परन्तु पिछले हजारों वर्षों में कोई भी विद्वान् इन ग्रन्थों की भाषा व भावना को समझने में समर्थ नहीं हो सका। किसी-२ आर्य विद्वान् के अतिरिक्त सभी देशी-विदेशी विद्वानों, चाहे वे अर्वाचीन हों वा मध्यकालीन, ने इन ग्रन्थों का बीभत्स याज्ञिक अर्थ करके पशुबलि, हिंसा, नरबलि, अश्लीलता, अवैज्ञानिकता किंवा बुद्धिहीनता का ही प्रतिपादन करके इन महान् ग्रन्थों के साथ-2 अपौरुषेय वेद संहिताओं के साथ भारी अन्याय किंवा अत्याचार किया है। हजारों वर्ष पश्चात् महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही इन ग्रन्थों के यथार्थ स्वरूप के विषय में कुछ संकेत किये परन्तु उनके पश्चात् यह कार्य विराम को प्राप्त हो गया। आचार्य जी के ऐतरेय भाष्य से (वेदविज्ञान-आलोकः) एवं निरुक्त भाष्य, जिस पर इस समय कार्य चल रहा है, के द्वारा संसार के वैदिक विद्वानों को वेदादि शास्त्रों के वैज्ञानिक भाष्य करने की एक नवीन (वस्तुतः सनातन) वैज्ञानिक पद्धति का ज्ञान होगा। इससे वेदादि शास्त्रों से न केवल उपर्युक्त कलंक सदैव के लिये समूल नष्ट हो जायेगा, अपितु **इन ग्रन्थों से एक ऐसे विज्ञान का प्रकाश होगा, जो आधुनिक सैद्धान्तिक भौतिकी के लिये आश्चर्यप्रद होगा एवं सभी वेदाभिमानियों के लिए गौरवजनक।**

आज विश्व में जहाँ कहीं भी वेदादि शास्त्रों के नाम पर जो भी अनुसंधान हो रहा है, वहाँ इस पद्धति का लेशमात्र भी अस्तित्व न होने से वैदिक वा आर्ष प्रयोगों का रूढ़ार्थ किया जा रहा है। महर्षि यास्क आदि प्राचीन ऋषियों एवं महर्षि दयानन्द की यौगिक परम्परा की नितान्त उपेक्षा की जा रही है। इस कारण सम्पूर्ण अनुसंधान कार्य किसी भी विद्या का प्रकाश नहीं कर पा रहा **है। वेद अनुसंधानकर्त्ताओं के शोधपत्र मात्र प्रमाणों का संग्रह ही होते हैं।**

उधर कोई विज्ञान के नाम पर आधुनिक विज्ञान के कुछ सिद्धान्तों को वेद वा आर्ष ग्रन्थों में खोजने का व्यर्थ प्रयास कर रहा है। इससे वैदिक विज्ञान का यथार्थ स्वरूप नष्ट हो रहा है। उधर कुछ विद्वान् वैदिक विज्ञान के ऐसे स्वरूप को प्रस्तुत करते हैं, जिसका इस ब्रह्माण्ड की रचना वा संचालन से कोई तर्क संगत, प्रयोगात्मक किंवा प्रेक्षणीय सम्बन्ध सिद्ध नहीं होता। ऐसी स्थिति में वैदिक अनुसंधानकर्त्ता आधुनिक विज्ञान को कुछ देना तो दूर, बल्कि उनके निकट ठहरने का भी सामर्थ्य नहीं रखते। **इस कारण बढ़ते आधुनिक विज्ञान के युग में वेदादि शास्त्र केवल अप्रासंगिक व उपेक्षणीय ही नहीं अपितु उपहास व निन्दा के भी पात्र बन गये हैं।** फलतः वैदिक परम्परा के ध्वजवाहकों की सन्तान भी पाश्चात्य शिक्षा का अनुसरण कर रही है। सम्पूर्ण भारत इसी दिशा में जा रहा है। वेद विद्या व वैदिक कर्मकाण्ड कुछ वेदोपदेशकों वा कर्मकाण्डियों की आजीविका मात्र का साधन बन गये हैं, वह आजीविका भी शनैः-2 समाप्त होती जा रही है। भारतीयता पाश्चात्य कलेवर धारण करके प्रकट हो रही है, राष्ट्रिय स्वाभिमान नष्ट हो रहा है। ऐसे विकट समय में **यह अनुसंधान कार्य सम्पूर्ण राष्ट्र को एक नई दिशा देकर नया राष्ट्रिय स्वाभिमान भरने में समर्थ होगा।**

2. वर्तमान भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान की दिशा व दशा- हम वर्तमान विज्ञान के युग का प्रारम्भ गैलीलियो से मान सकते हैं। वर्तमान काल में पदार्थ विज्ञान निरन्तर उत्कर्ष को प्राप्त कर रहा है। यहाँ यह कहना कि पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने भारतीय पुरातन वैदिक विज्ञान से ही सब कुछ वा बहुत कुछ सीखा है, विवादास्पद हो सकता है, क्योंकि यह इतिहास का विषय है। इस कारण हम स्वयं को विज्ञान तक ही सीमित रखेंगे। गैलीलियो से प्रारम्भ हुआ पाश्चात्य भौतिक विज्ञान अनेक प्रकार के परिवर्तनों, परिवर्धनों व संशोधनों से गुजरता हुआ आज शिखर पर पहुंचा हुआ माना जा रहा है। Theoretical Physics के क्षेत्र में Cosmology में Big Bang Model, Big Bang Cycle, Steady State Theory, Eternal Universe तथा अन्य शाखाओं के रूप में Astrophysics, Plasma Physics, Quantum Field Theory एवं String Theory पर विश्व भर में विशाल स्तर पर कार्य हुआ है और हो

रहा है। उधर Technology के क्षेत्र में विश्व तेजी से आश्चर्यजनक प्रगति कर रहा है। कभी-2 ऐसा प्रतीत होता है कि वर्तमान विश्व ने टैक्नोलॉजी के विकास एवं उससे भोगविलास के साधन जुटाने को ही अपने जीवन का लक्ष्य एवं इसे ही भौतिक विज्ञान मान लिया है। विज्ञान के अन्य क्षेत्र यथा- रसायन, प्राणि विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भूगर्भ, इन्जीनियरिंग, आयुर्विज्ञान, सूचना तकनीक आदि सभी मूलतः Theoritical Physics की ही देन हैं किंवा यही उनका मूल वा बीज है। **वर्तमान में यह मूल अथवा बीजरूप Theoritical Physics ही अनेक समस्याओं से ग्रस्त है।** Big Bang model का विश्व में विरोध बढ़ता जा रहा है। यह model मूलभूत प्रश्नों का उत्तर देने में नितान्त असमर्थ है किंवा इसका मूल ही मिथ्या अवधारणाओं पर टिका है। इस थ्योरी में अनेक समस्याओं को अनुभव करके, इसके समर्थक नाना मिथ्या कल्पनाओं के द्वारा इसकी पुष्टि का असफल प्रयास कर रहे हैं, तो दूसरी ओर कुछ वैज्ञानिक इसे असत्य सिद्ध करके अन्य वैकल्पिक सिद्धान्त प्रस्तुत कर रहे हैं परन्तु वहाँ भी अनेक समस्याएं विद्यमान हैं। **वस्तुतः काल, आकाश, द्रव्यमान, ऊर्जा, मूलकण, क्वाण्टा, विद्युत् आवेश आदि की उत्पत्ति एवं संरचना जैसे विषयों में वर्तमान भौतिकी प्रायः अंधेरे में है।** Quantum Field Theory में कल्पित Virtual Particles की वास्तविकता पर स्वयं विज्ञान ही संदेह में है, इसी कारण इसे Virtual नाम दिया गया। इस कल्पित कण पर ही यह सम्पूर्ण Theory टिकी है। यदि इस Mediator Particle को Virtual न मानकर वास्तविक मानें, तब भी उसकी उत्पत्ति की स्रोत Vaccum Energy के स्वरूप व संरचना का कोई विशेष ज्ञान अभी नहीं है। **ब्रह्माण्ड के कल्पित प्रसार की कारणरूप डार्क एनर्जी के अस्तित्व पर वैज्ञानिक जगत् में घमासान मचा हुआ है।** वर्तमान विज्ञान में सर्वाधिक सूक्ष्म मानी जाने वाली String Theory अभी अनेकत्र अनुत्तरित प्रश्नों से ग्रस्त होने से वैज्ञानिक जगत् को भी व्यापक रूप से स्वीकार्य नहीं हो पा रही है। **उधर अनेक वर्षों से सम्पूर्ण Theoritical Physics में विशेष अनुसंधान नहीं हो पाने से संकट जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई लगती है।** इस विषय में विश्व की सबसे बड़ी

प्रयोगशाला CERN की वेबसाइट पर एक लेख में भी ऐसी ही कुछ आशंका इस प्रकार की है-

…without new discoveries it's hard to keep a younger generation interested: "If both the LHC and the upcoming cosmological surveys find no new physics, it will be difficult to motivate new theorists. If you don't know where to go or what to look for, it's hard to see in which direction your research should go and which ideas you should explore."… **(In Theory: Is theoretical physics in crisis?** Posted by Harriet Kim Jarlett on 18 May 2016.)

आज नित नये आविष्कार हो रहे हैं। **हिग्स बोसोन एवं गुरुत्वीय तरंगों की खोज इस समय की सबसे बड़ी खोजों के रूप में मानी जा रही हैं।** पुनरपि इन पर भी विशेषकर हिग्स बोसोन पर आचार्य जी ने स्वयं इससे जुड़े कुछ **ख्यातिर्लब्ध भारतीय वैज्ञानिकों के समक्ष कुछ प्रश्न खड़े किये थे, परन्तु उनका उत्तर इस समय संसार में नहीं है, उन्हें ऐसा अनुभव हुआ।** अभी University of California, Irvin के वैज्ञानिक पांचवां मूल बल खोजने का दावा करके आधुनिक भौतिकी के बदलने की आशंका व्यक्त कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में वर्तमान Dynamic Physics कहाँ खड़ी है और कहाँ जायेगी, यह चिन्तन का विषय है। **आचार्य जी ने इस Physics के पांच मूल बल नहीं, बल्कि नौ मूल बल अपने वैदिक विज्ञान के आधार पर बताए हैं, तब वर्तमान Physics का क्या होगा? यह अत्यन्त महत्वपूर्ण बात है। उनकी वैदिक रश्मि थ्योरी वर्तमान भौतिकी में क्रान्ति मचा देगी, ऐसा विश्वास है। ऐतरेय ब्राह्मण का यह वैज्ञानिक व्याख्यान ग्रन्थ (वेद-विज्ञान-आलोक) Theoretical Physics की वर्तमान Crisis को समाप्त करके अनुसंधान के नये-२ अवसर व क्षेत्र प्रदान करेगा।** आचार्य जी ने 29 अगस्त 2013 को विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक संस्था NASA, CERN के अतिरिक्त यू.एस.ए., यू.के., फ्रांस, जर्मनी, नीदरलैण्ड, दक्षिण कोरिया, जापान, स्विट्जरलैण्ड के

कई वैज्ञानिकों तथा भारत के ISRO, NPL आदि के कुछ वैज्ञानिकों के समक्ष वर्तमान भौतिकी पर बारह प्रश्न किये थे, किन्तु उन्हें निराशा ही हाथ लगी। उन प्रश्नों में एक प्रश्न Black Hole की वर्तमान अवधारणा को लेकर था। उसके पश्चात् जनवरी 2014 में **ब्रिटिश भौतिक वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग** ने अपनी Black Hole अवधारणा को स्वयं खण्डित किया। वस्तुतः इसका श्रेय भारतीय खगोलशास्त्री प्रो. आभास कुमार जी मित्रा को है, जो सम्भवतः सन् 2004 से ही Black Hole की वर्तमान अवधारणा का खण्डन कर रहे थे। Big Bang model के शून्य आयतन में असीम ऊर्जा, ताप व द्रव्यमान की अवधारणा का खण्डन आचार्य जी ने World Congress on Vaidic Science में अगस्त 2004 बंगलौर में ही किया था। ऐसा करने वाले उस Congress में एकमात्र वे ही थे। 19-04-2006 को उन्होंने अपनी पुस्तक **'सृष्टि का मूल उपादान कारण'** का अंग्रेजी संस्करण "Basic Material Cause of the Creation" **स्टीफन हॉकिंग के साथ-2 तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति एवं कैलिफॉर्निया विश्वविद्यालय** को भेजकर अनुरोध किया था कि वे Big Bang model पर पुनर्विचार करें। इसके पश्चात् स्टीफन हॉकिंग ने अपनी शून्य आयतन वाली धारणा में शनैः-2 कुछ परिवर्तन किया तथा अमरीका के एरिजोना विश्वविद्यालय एवं क्वींसलैण्ड विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने हिग्स बोसोन के घनीभूत होने के लिये अति शीतलता की आवश्यकता प्रतिपादित की (राजस्थान पत्रिका 18-10-2008) हमारा यह दावा तो नहीं कि यह परिवर्तन आचार्य जी के कारण ही हुआ, परन्तु यह सत्य है कि इससे पूर्व उन्होंने अपना मत प्रस्तुत किया था। आचार्य जी का वह मत तो सर्वथा प्रारम्भिक था। अब तो बहुत विस्तृत ग्रन्थ 'वेदविज्ञान-आलोकः' प्रकाशित हो चुका है, **जो सम्पूर्ण वैज्ञानिक जगत् में बड़ी हलचल उत्पन्न करने में समर्थ है। यह ग्रन्थ भौतिक विज्ञान प्रेमियों में बहुत लोकप्रिय हो रहा है। यह ग्रन्थ भारत के अतिरिक्त, टर्की, अर्जेंटीना, अमेरिका, नीदरलैण्ड, म्यांमार, सिंगापुर, संयुक्त अरब अमीरात, दक्षिण अफ्रीका, कनाडा, जर्मनी, ब्रिटेन, स्वीडन, ऑस्ट्रेलिया एवं मॉरिशस** आदि कुल चौदह देशों में पहुँच चुका है। आचार्य जी के इस ग्रन्थ की पूर्वपीठिका पर व्याख्यान यू-ट्यूब पर Vaidic Physics चैनल

के माध्यम से विश्व में अनेक देशों में चर्चित हुए हैं। 10 अप्रैल 2018 को विश्वभर के 200 वैज्ञानिकों द्वारा ब्लैक होल के प्रथम बार चित्र लेने तथा उसके विषय में नयी जानकारी देने पर इंग्लैण्ड एवं फिजी देशों के विज्ञान प्रेमियों के आग्रह पर आचार्य जी के एक वीडियो **'Black Hole पर क्या कहती है Vaidic Physics?'** ने संसार में हलचल मचा दी। इस वीडियो को अब तक लगभग 92 हजार व्यक्ति देख चुके हैं। इसके पूर्व भी सन् 2017 में गुरुत्वीय तरंगों की खोज पर तीन अमरीकी भौतिक वैज्ञानिकों को नोबल पुरस्कार देने की घोषणा पर आचार्य जी ने उनके शोध पत्र पर नौ प्रश्न नोबल पुरस्कार फाउण्डेशन, तीनों वैज्ञानिकों, नासा, CERN के अतिरिक्त विश्व के 27 देशों के शीर्ष 40 विश्वविद्यालयों के भौतिक विज्ञान विभाग को भेजे, जिनका कोई उत्तर नहीं दे पाया। NASA ने अपना पल्ला झाड़ कर Ligo से सम्पर्क की बात की, तो एक नोबल पुरस्कार विजेता Kip Thorne ने प्रश्नों से अभिभूत होने तथा उनका उत्तर देने में दुर्भाग्यवश असमर्थ होने की बात कही। आचार्य जी ने इन वैज्ञानिकों को यह भी कहा कि यदि आधुनिक विज्ञान इन प्रश्नों के उत्तर नहीं दे सकता और हमसे उत्तर चाहता है, तो हम अपनी वैदिक फिजिक्स के आधार पर उत्तर दे सकते हैं, इस पर सभी मौन रहे। यह बड़े गर्व की बात है कि आज विश्व में भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में जब भी कोई बड़ी खोज होती है, तब अनेक देशों के युवा आचार्य जी से उस पर उनके विचार जानना चाहते हैं।

3. वैज्ञानिकों के विचार– आचार्य जी ने पूर्वोक्त ख्यातिर्लब्ध वैज्ञानिकों से अब तक जो चर्चा की है, वह अधिकांशतः वर्तमान भौतिकी की समस्याओं को लेकर की है। वैदिक विज्ञान के विषय में उनका कार्य पूर्ण न हो पाने के कारण उन्होंने उस पर विशेष चर्चा किसी से नहीं की है। कुछ–2 बिन्दुओं का संकेत अवश्य चर्चा के दौरान हुआ है। उन्होंने इन वैज्ञानिकों को कुछ संकेत रूप में इतना अवश्य बताया है कि उनकी थ्योरी में वर्तमान भौतिकी की किन–2 गम्भीर व अनसुलझी समस्याओं का समाधान मिलेगा। उन्होंने जब यह कार्य प्रारम्भ ही किया था, उस समय सन् 2005 में **भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र** के कुछ वैज्ञानिकों के आग्रह पर एक पुस्तक **'सृष्टि**

का मूल उपादान कारण' पर प्रख्यात **भारतीय खगोलशास्त्री प्रो. आभास कुमार जी मित्रा** ने उसकी प्रस्तावना में लिखा था-

"...This small book by Acharya Swami Agnivrata is an attempt to appraise the readers and the physicists about the Vedic view on this topic. I hope the professional physicists would treat this book with due respect and not with short-sighted ridicule and disdain...... It is highly creditable that though Swami Agnivrata have not had much of formal education in Physics he has privately studied physics with great ardour in order to understand Vedic messages in a clear way. To my surprise I found Swami Agnivrata to be keenly aware of several shortcomings of particle physics like there may not be any paticle or set of particles which can be truly called as fundamental constituents of the Universe. He feels that answers to such questions can be eventually found only in Vedas..... I feel that even professional scientists might, at certain junctures, improve the investigations by taking clues from the Vedas....... I have personally benefited from reading of this book and I hope other readers and professional physicists would be benefited too by reading the same.

इस बात को आज 11 वर्ष से अधिक हो चुके हैं और आचार्य जी ने ब्रह्माण्ड पर सर्वथा नवीन थ्योरी Vaidic Rashmi Theory of Universe **की स्थापना अपने ऐतरेय व्याख्यान में की है। अनेक वैज्ञानिक आचार्य जी के कार्य से जुड़ रहे हैं। इनमें से कुछ अपने देश में रहते हैं, तो कुछ विदेश में भी रहते हैं। उनमें बहुत बड़े उत्साह का संचार हुआ है। वे आचार्य जी को इस क्षेत्र**

में अपना मार्गदर्शक मानते हैं। कुछ वैज्ञानिकों के आचार्य जी के विषय में विचार निम्नानुसार है –

''आचार्य अग्निव्रत जी ने कई वर्षों तक अथक प्रयत्न करके प्राचीन भारतीय शास्त्रों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया है और कई नये तथ्य प्रस्तुत किये हैं, जिनसे आधुनिक वैज्ञानिक शोध को नयी दिशा मिलेगी। ऐसा लगता है कि शास्त्रों के सूत्रों में ब्रह्माण्ड के बारे में अति सूक्ष्म तथ्यों और सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है– आवश्यकता है उनको ठीक से तर्क संगत रूप में समझने की । आचार्य जी ने यह काम सफलतापूर्वक किया है और अब उसको आगे बढ़ाने की जरूरत है। मुझे विश्वास है कि यह हमें आगे प्रगति में सहायता करेगा।''

–प्रोफेसर नरेन्द्र भंडारी
Space Scientist, member of moon mission
"Chandrayan 1st and 2nd", अहमदाबाद

''आचार्य अग्निव्रत जी पाश्चात्य और प्राचीन भारतीय भौतिक विज्ञान एवं आध्यात्मिक शास्त्रों के गहन अध्ययनकर्ता हैं। अभी–अभी उन्होंने ऋग्वेद के ऐतरेयब्राह्मण का आधिदैविक भाष्य किया है। उस भाष्य द्वारा उन्होंने आधुनिक भौतिक शास्त्र की पहुँच जहाँ तक है, उससे आगे सूक्ष्मता से सृष्टि उत्पत्ति–व्यवस्थापन इत्यादि की सर्वांगीण जानकारी ऐतरेयब्राह्मण के आधार पर दी है। उनका यह प्रयास बहुत ही मूलभूत है तथा इसके आधार पर विस्तृत अध्ययन–संशोधन होने पर ज्ञान–विज्ञान की शाखाओं की अतीव प्रगति एवं विस्तार में मदद होगी।

आचार्य जी इस विषय में सभी आधुनिक एवं प्राचीन विज्ञान के जिज्ञासुओं को मार्गदर्शन करने के लिए कटिबद्ध हैं। इससे विज्ञान की उन्नति को एक नई दिशा मिलेगी। आचार्यजी के इस कार्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।''

–प्रा. वसंतकुमार मदनसुरे
M.Tech. Ph.D., Akola, Maharastra

''आज जब आधुनिक भौतिक विज्ञान एक जगह आकर ठहर सा गया है, आज जब प्राचीन भारतीय वैदिक सिद्धातों की वैज्ञानिकता विस्मृत हो चुकी है - ऐसे समय में आचार्य अग्निव्रत जी ने वेद विज्ञान अनुसंधान का अति-आवश्यक कार्य करने का बीड़ा उठाया है। आचार्य जी के कार्य का अनुसरण ऐसे सभी व्यक्ति करें -

- जिन्हें वेदों की वैज्ञानिकता पर संदेह है।
- जो वैदिक सिद्धांतों को अतार्किक एवं पोल समझते हैं।
- जो आधुनिक भौतिक विज्ञान की अनेक परिकल्पनाओं की भूल भुलैया से फंसकर सही मार्ग नहीं देख पा रहे।

साथ ही ऐसे सभी व्यक्ति भी -

- जिन्हें वेदों में आस्था तो है, परन्तु उसके सिद्धातों का तार्किक आधार नहीं जानते।
- जो प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान को जानना चाहते हैं।
- जो भारत को पुनः विश्वगुरु के रूप में देखना चाहते हैं।
- जिनमें सृष्टि-उत्पत्ति के गूढ़ रहस्य सुलझाने की ललक है और उसके लिए आवश्यक सत्यज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं।

उनके इस कार्य के लिए हार्दिक धन्यवाद एवं शुभकामनाएँ।''

-दीप्ति विद्यार्थी

M.Tech. Ph.D. Scholler, Assistant Professor, National Defense Academy, Pune

''वन्दनीय आचार्य श्री का ऐतरेय ब्राह्मण का वैज्ञानिक भाष्य युगान्तरकारी है और सूक्ष्म गूढ़ ज्ञान को उद्‌घाटित करने वाला है। इस सृष्टि में जड़ प्रकृति में द्रव्य व ऊर्जा की अन्तक्रिया के कारण विभिन्न भौतिक प्रभाव प्रेक्षित होते हैं। प्रस्तुत कार्य से द्रव्य व ऊर्जा के मूलभूत घटकों के सम्बन्ध में मौलिक दृष्टि मिलती है। प्रस्तुत सिद्धान्त उच्च ऊर्जा भौतिकी व क्वांटम क्षेत्र सिद्धान्त के अनसुलझे रहस्यों से पर्दा हटाते हैं। खगोल भौतिकीय परिवर्तन कब, क्यों व कैसे होते हैं, पर विस्तार से विवेचन किया गया है। डार्क पदार्थ व डार्क ऊर्जा पर भी सर्वथा नवीन दृष्टि दी गई है। रश्मि, छन्द, प्राण व वायु जैसी अद्‌भुत संकल्पनाएं न केवल सैद्धान्तिक भौतिकी का पथ प्रदर्शित करेंगी, बल्कि प्रायोगिक संभावनाएं भी अपरिमित मात्रा

में बढ़ेंगी। इस भाष्य से सर्वप्रमुख इस बात का जवाब मिलेगा कि यह सृष्टि कैसे बनती है। वैज्ञानिक समुदाय को इस कार्य से आशातीत शोध सूत्र मिलने की प्रबल अपेक्षा है।''

–डॉ० वेद प्रकाश आर्य
सहायक प्रोफसर
भौतिक विज्ञान विभाग, रीजनल कॉलेज (अजमेर)

''नमस्कार आचार्यजी, मैं एक भारतीय हूँ और आपकी तरह ही भारत की समृद्ध संस्कृति और वैदिक शिक्षा पद्धति में विश्वास रखता हूँ। मैं आपको और आपके कार्य को शत शत नमन करता हूँ। मैं अलग अलग सामाजिक माध्यमों के द्वारा आपके विचारों और कार्यों को निरंतर देखता और समझता हूँ। मैं आपकी इस यात्रा में स्वेच्छा से अपने तुच्छ स्तर पर सहयोग देना चाहता हूँ। मैं पदार्थ विज्ञान में पीएचडी हूँ एवं शोध पत्र लिखने का मुझे एक लंबा और सफल अनुभव अगर आप मुझे थोड़ी सेवा का अवसर दें, तो मैं आपके अंग्रेजी के लेखों की प्रूफरीडिंग में सहायता करके, भारत सेवा में अपना श्रमदान देने का इच्छुक हूँ। भारत को भारतीय पद्धति और संस्कृति के अनुसार जागरूक करने के लिए आतुर आचार्य जी द्वारा लिखित 'वेदविज्ञान-आलोकः' एक ग्रन्थ ही नहीं अपितु सत्य का प्रकाशक है।''

–सतेन्द्र कटारीया
RWTH Aachen University,
Chair of Electronic Devices, Germany

"Dear Swamiji, I am reading your book part 1. Even first chapter impressed me material science and spiritual science. I faced always a big question when our body is made of atoms and molecules then from where these Kaam, Krodh, Lobh, Raag and Dwesh come. Also what is the origin of force, energy.But after reading your book, I believe that all my doubt will clear. This is really a holy work which the current world is required urgently.I recently shifted to India and got a

position of director in an educational institute in Aligarh(UP). I want to part of your team also. I am attaching my CV along with this mail.Since I am in India, I would like to meet you if there are a function in future please inform me also. Also I am new to UPI system, I just send 2000 inr (please find the proof in attachment). Can you please confirm it so I can send more money."

- Dr Sandeep Kumar Singh
Visiting Researcher, Materials and Surface Theory, Department of Physics, Chalmers University of Technology, Gothenburg, Sweden

"Swamiji, Pranam, I am researching on Dark Energy for last three years. I am an engineer and recently joined the Cosmology research group at university. don't have faith in the current model of Cosmology and believe that we are missing something fundamental. Your lectures are interesting. I want to ask where in Rig Veda all this is written. Are your teachings directly derived from Rig Veda?"

-Simerdeep Singh, Vancouver Canada

उनके परिचित अनेक वरिष्ठ वैज्ञानिक आचार्य जी के शोध कार्य पर मौन भी हैं। इसका कारण यह है कि वैदिक भौतिकी उनके लिए सर्वथा नई तथा वर्तमान भौतिकी से बहुत भिन्न है। वस्तुतः उनकी वैदिक फिजिक्स वर्तमान भौतिक वैज्ञानिकों को नयी तथा विचित्र प्रतीत होगी परन्तु ऐसा होना तो स्वाभाविक है। वर्तमान String theory भी उनके परिचित अनेक वैज्ञानिकों को विचित्र व काल्पनिक ही प्रतीत होती है, पुनरपि उस पर अनेक वैज्ञानिक कार्य कर ही रहे हैं और विश्व भर के वैज्ञानिक संस्थान उस पर शोध हेतु अपने वैज्ञानिकों का सहयोग भी कर रहे हैं। विश्व के शीर्ष भौतिक वैज्ञानिक

आचार्य जी के विज्ञान की तार्किक परीक्षा अवश्य करें, साथ ही अपने स्थापित भौतिक विज्ञान पर उनकी आपत्तियों पर विचार भी करें, ऐसा हमारा निवेदन है। यदि उन्हें वर्तमान भौतिक में समस्याएं अनुभव होती हैं, तब वे उनके समाधान के आचार्य जी के वैदिक उपायों की भी निष्पक्ष परीक्षा करें।

“ आज हमारी शिक्षा प्रणाली, राजनैतिक व्यवस्था, सामाजिक ढांचा, परिवार वा व्यक्ति सभी ऐसे हो चले हैं, जैसे या तो ये सभी कहीं विदेश वा दूसरे लोकों से आये हैं अथवा अंग्रेजों ने ही आकर इस देश का निर्माण किया है। ये दोनों ही विचार बड़े भयानक हैं।

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

“ मेरा प्रयोजन किसी तकनीक को खोजना नहीं, बल्कि करोड़ों वर्ष पुरानी वैदिक भौतिकी, जो लगभग चार हजार वर्ष पूर्व लुप्त हो चुकी थी, को पुनर्जीवित करके ब्रह्माण्ड को समझने का प्रयास करना है।

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

“ प्रत्येक बुद्धिमान् मनुष्य को अति उचित है कि वह ईश्वर की सत्ता व वैज्ञानिक स्वरूप पर पूर्वाग्रह व हठ आदि दोषों से मुक्त होकर प्रखर वैज्ञानिक मस्तिष्क से गंभीरता से विचार करके ही ईश्वर को मानने के साथ-2 जाने भी। इससे ही संसार में शांति व मैत्री की स्थापना हो सकेगी।

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

5. वर्तमान सैद्धान्तिक भौतिक विज्ञान एवं आचार्य जी के समक्ष चुनौती

पूर्वोद्धृत प्रथम 18 वैज्ञानिकों से आचार्य जी के संवाद का विषय प्रायः वर्तमान भौतिक विज्ञान ही रहा है। इस संवाद से यह तो निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि वर्तमान भौतिक वैज्ञानिक अपने विज्ञान को अनेकों समस्याओं से ग्रस्त एवं अपूर्ण मानते हैं। जब हमने माननीय प्रधानमंत्री महोदय के माध्यम से भौतिक विज्ञान के राष्ट्रिय अनुसंधान संस्थानों से पारस्परिक संवाद तथा वैदिक भौतिकी के द्वारा आधुनिक भौतिकी की समस्याओं के निराकरण का आग्रह वा निवेदन किया, तब उनका मत यह देखा कि वे पद्धतियों के पृथक्-2 होने का बहाना बनाकर हमारे साथ मिलकर चलने को उद्यत नहीं हैं। अगस्त 2017 के प्रथम सप्ताह में आचार्य जी श्री विशाल आर्य उपाचार्य एवं श्री राजाराम सोलंकी को साथ लेकर भारत सरकार में विधि व न्याय एवं सूचना प्रोद्यौगिकी राज्य मंत्री माननीय श्री पी.पी. चौधरी के माध्यम से **'जी' ग्रेड वैज्ञानिक श्री अशोक कुमार शर्मा** से मिले। श्री शर्मा को आचार्य जी का कार्य इतना महत्वपूर्ण लगा कि वे पौने तीन घंटे लगातार संवाद करते रहे। अन्त में उन्होंने पूर्व में भारत भर में थ्योरिटीकल फिजिक्स के कार्य को देखने वाले तथा उस समय विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली में **मेगा सायंस प्रोजेक्ट के हैड डॉ. प्रवीर अस्थाना** से आचार्य जी के साथ संवाद करने हेतु केवल 10 मिनट समय देने का आग्रह किया। उनकी स्वीकृति के पश्चात् आचार्य जी उनसे मिले तथा एक घंटा बीस मिनट तक व्यापक चर्चा हुई।

यद्यपि वे आचार्य जी के कार्य से बहुत प्रभावित थे परन्तु वर्तमान विज्ञान की अपूर्ण पद्धति तथा बौद्धिक दासत्व से ग्रस्त यह देश वैदिक विज्ञान को समझने में सहसा सक्षम नहीं है। वे चाहते हैं कि आचार्य जी शोधपत्र लिखें परन्तु वे ऐसे शोध पत्र न लिखें, जो आइंस्टीन व पीटर हिग्स जैसे विश्वविख्यात अमरीकी वैज्ञानिकों के उन शोध पत्रों, जिनको प्रमाणित करने में क्रमशः एक सौ वर्ष तथा 61 वर्ष लगे, के समान नहीं हों। बल्कि वे ऐसे शोधपत्र लिखें, जिन पर तत्काल ही भारत में प्रयोग हो सकें।

हमारे देशवासियो! क्या यह आचार्य जी अथवा सम्पूर्ण वैदिक विज्ञान के साथ घोर अन्याय नहीं है? अमरीका वा यूरोप आदि देशों में वैज्ञानिकों के शोध को प्रमाणित करने हेतु भारत सहित अनेक देशों के वैज्ञानिक सौ-2 वर्ष तक सम्पूर्ण शक्ति के साथ लगे रहते हैं, जबकि एक वैदिक वैज्ञानिक के शोध को प्रमाणित करने हेतु वे किञ्चित् भी धैर्य रखने को तैयार नहीं। यह है भारत के बौद्धिक वा वैज्ञानिक दासत्व का जीता जागता प्रमाण। उनका कहना था कि ये शोधपत्र वर्तमान वैज्ञानिक पत्रिकाओं में छपें। आधुनिक भौतिकी, जिसका आचार्य जी खण्डन करते हैं, उसी के विशेषज्ञ आचार्य जी के शोध पत्रों के परीक्षक बनें। पारस्परिक चर्चा व शंका समाधान का कोई अवसर नहीं। यह कैसा न्याय है? डॉ. अस्थाना जी ने स्वयं भी इस प्रक्रिया को दुर्भाग्यपूर्ण व दर्दभरी बताया। इसी क्रम में भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के एक विभाग SEED के हैड **G-ग्रेड वैज्ञानिक डॉ. देवप्रिय दत्त** ने आचार्य जी को अपने विभाग में आमन्त्रित किया और व्यापक चर्चा की। तब उन्होंने कहा **'आचार्य जी दुर्भाग्य से हम लोग पश्चिमी विज्ञान को महत्व देते हैं और अपने प्राचीन विज्ञान को भूल जाते हैं। आपके पास बहुत अनोखा विज्ञान है परन्तु दुर्भाग्य से इस विभाग में ऐसा कोई सिस्टम नहीं है, जो आपके शोध कार्य हेतु कोई शोध केन्द्र बना सके। इसके लिए केवल माननीय प्रधानमंत्री जी ही सक्षम हैं।'** जब आचार्य जी ने अपना ग्रन्थ 'वेदविज्ञान-आलोकः' **राजस्थान के राज्यपाल महामहिम श्री कल्याण सिंह जी** को भेंट किया, तब उन्होंने आचार्य जी से व्यापक चर्चा की एवं अनेक प्रश्नोत्तर किए। अन्त में उन्होंने कहा **'आचार्य जी! आप धरती पर एक बड़ा कार्य कर रहे हैं, इसके लिए बहुत-२ बधाई परन्तु इसके लिए आपकी माननीय प्रधानमंत्री जी से कम से कम आधा घंटा चर्चा होना आवश्यक है।** वे ही इस कार्य को आगे ले जाने में सहयोग-सरंक्षण दे सकते है।' P.M.O. ने यह ग्रन्थ मंगाया भी तथा **माननीय डॉ. सत्यपाल सिंह जी,** तत्कालीन MoS H.R.D. से आचार्य जी के विषय में जानकारी भी मांगी परन्तु अभी तक P.M.O. ने बुलाया नहीं। आचार्य जी के कार्य से बहुत प्रभावित **भारत के एक स्पेस साइंटिस्ट प्रो. ओ. पी. पाण्डेय,** जो स्वयं वैदिक भौतिकी पर भी महान् कार्य कर रहे हैं, ने आचार्य जी को कहा, ''नैष्ठिक जी! आपके कार्य को न तो आधुनिक वैज्ञानिक

पूर्णतः समझ पायेंगे और न वैदिक विद्वान् ही, बल्कि वे ही समझ पायेंगे, जो दोनों के क्षेत्रों के विशेषज्ञ हों।'' उल्लेखनीय है कि प्रो. पाण्डेय जी ने ही नासा में रहते हुए सूर्य में उत्पन्न होने वाली 'ओम्' ध्वनियों को डिटेक्ट किया तथा ऐसा उन्होंने स्वयं आचार्य जी को बताया था। **हम भारत के वैज्ञानिकों एवं भारत सरकार से कहना चाहते हैं कि चिकित्सा की ऐलोपैथी पद्धति के साथ-2 उसके समानान्तर आयुर्वेदिक, यूनानी, होम्योपैथी व नेचुरोपैथी पद्धतियां भी चल रही हैं। सरकार सबको मान्यता व आर्थिक सहयोग भी दे रही है, तब वैदिक विज्ञान के लिए पृथक विभाग क्यों नहीं बनाया जा सकता?** क्या वेदपाठ के गुरुकुल खोलना मात्र ही वेद विद्या का स्वरूप मान लिया जाए? जो भारत सरकार खोल भी रही है। हम भारत सरकार को निरन्तर जगाने का प्रयास करते रहेंगे।

“ इस ब्रह्माण्ड को जो भौतिक वैज्ञानिक जितनी गहराई तक समझेंगे, उन्हें ब्रह्माण्ड के रचयिता व संचालक ईश्वर का उतना ही अधिक बोध होता चला जायेगा।

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

“ जो बिना विचारे अहंकारवश ईश्वर की सत्ता को नकारते हैं, वे मानव को स्वच्छन्द भोगवादी बनाकर पशु से भी अधम बनाते हैं और जो सृष्टि को बिना विचारे आस्था व विश्वास वा परम्परा के नाम पर ईश्वर की पूजा करते हैं, वे मानव जाति को अंधविश्वास के गहन अंधकार में धकेलते हैं। इधर हमारा वैदिक विज्ञान दोनों को ही सत्य मार्ग पर लाकर मानव को वास्तव में मानव बनाता है।

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

6. आएं चलें – बौद्धिक स्वतंत्रता की ओर

प्रिय देशभक्त पाठकगण! क्या आपके मस्तिष्क में कभी ऐसा आभास होता है कि हमारा स्वतन्त्र कहलाने वाला राष्ट्र हर प्रकार से परतन्त्र है। यहाँ तक कि हमारी स्वतंत्रता देवी स्वयं पराधीनता की बेड़ी में फंसी आर्तनाद कर रही है। हमारा संविधान अधिकांशतः विदेशी संविधानों की नकल मात्र है। वर्तमान में हम प्रत्येक कानून व नीतियों के बनाने के लिए विदेशों की ओर ही देख रहे हैं। हमें अपने प्राचीन इतिहास, संस्कृति व शिक्षा में कुछ भी सत्य व हितकारी अनुभव नहीं होता, बल्कि सब कुछ मिथ्या कल्पना व मूर्खतापूर्ण प्रतीत होता है। हमारा आहार, व्यवहार, संस्कार, भाषा, वेशभूषा, सामाजिक रीति-नीति, अर्थशास्त्र, कृषि, व्यापार, पर्यावरण सम्बन्धी दृष्टि, खेल व मनोरंजन आदि सभी क्षेत्रों में हम विदेशों का ही अनुकरण कर रहे हैं। **क्या अनुकरण करने वाला भी स्वयं को बुद्धिमान् कहने का साहस कर सकता है? यदि कोई ऐसा करता है, तो वह दुःसाहस ही कहा जायेगा। क्या आपने कभी सोचा है कि इस समग्र दासता का मूल कारण विदेशी शिक्षा पद्धति अर्थात् बौद्धिक दासता है। बौद्धिक दासता से मनुष्य का स्वत्व समाप्त होकर आत्मा-स्वाभिमान नष्ट हो जाता है, फिर वह ऐसा ही बन जाता है, जैसा बनाने का स्वप्न कभी मैकाले ने देखा था।** आज हमारे देश का नागरिक विशेषकर प्रबुद्ध नागरिक वा युवा मैकाले की वंदना करने को विवश है। बौद्धिक दासता से मानसिक दासता को प्राप्त करके यह देश अपनी स्वतंत्रता को भी आत्मिक रूप से विदेशों की दासी बनाकर भी निर्लज्जतापूर्वक स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा है। स्मरण रहे कि इस प्रकार की दासता के चलते राष्ट्र की एकता व अखण्डता अधिक दिन तक नहीं चल पायेगी और देश पुनः पराधीन होने की दिशा में बढ़ने लगेगा।

आचार्य जी के इस शोधकार्य एवं ऐतरेय ब्राह्मण के वैज्ञानिक व्याख्यान से देश के वैज्ञानिक प्रतिभासम्पन्न नागरिकों को ही नहीं, अपितु शीर्ष वैज्ञानिकों को भी सनातन वैदिक विज्ञान के सम्मुख वर्तमान विज्ञान कई क्षेत्रों में बौना प्रतीत होने लगेगा। इससे उनकी रुचि न केवल ऐतरेय ब्राह्मण के इस व्याख्यान को पढ़ने की ओर

होगी, अपितु उन्हें वेदों व ऋषियों के ग्रन्थों के प्रति अपनी पुरानी अज्ञानतापूर्ण सोच पर पश्चाताप भी होगा। वे संस्कृत भाषा के विद्वान् बनकर आचार्य जी से ब्राह्मण ग्रन्थ व वेदों का विज्ञान जानने व पढ़ने की ओर आकृष्ट होंगे। इससे शनैः-2 आधुनिक भौतिकी वैदिक भौतिकी की ओर आने को विवश होगी। एक बार ऐसा प्रवाह चला, तो विज्ञान की अन्य शाखाओं पर भी इसका प्रभाव पड़कर विद्या की अन्य विधाओं पर भी वैदिक आर्ष सनातन ग्रन्थों की छाया पड़ने लगेगी। इससे धीरे-2 आचार्य जी के शिष्य श्री विशाल आर्य जैसे अनेक प्रतिभाशाली शोधकर्ता तैयार होकर भारत सरकार के सहयोग से आधुनिक विद्याओं के स्थान पर वैदिक विद्याओं को स्थापित करने की दिशा में प्रवृत्त होंगे। **इससे धीरे-2 भारत में सम्पूर्ण रूप से अपनी स्वदेशी शिक्षा, विज्ञान व टैक्नोलॉजी, जो अपनी ही भाषा हिन्दी तथा ब्रह्माण्डीय भाषा संस्कृत में होगी, की स्थापना हो सकेगी।** यद्यपि इस में 50-100 वर्ष लग सकते हैं। मैकाले की शिक्षा को भारत में स्थापित होने में भी लगभग एक सदी से अधिक समय लगा, जबकि उसके साथ उस समय का संसार का सर्वशक्तिमान् ब्रिटिश साम्राज्य था। उसके पश्चात् हमारे देश के नेतृत्व ने भी पूर्ण साथ दिया तथा अभी भी दे रहा है, तब क्या आचार्य जी को भारत सरकार एवं भारतीय नागरिकों के पूर्ण सहयोग व 50-100 वर्ष का समय नहीं चाहिए?

प्रिय पाठकगण! **यह महान् कार्य जादू की छड़ी की भांति तत्काल नहीं हो सकता। भारतीय शिक्षा, विज्ञान नष्ट होने में हजारों वर्ष लगे हैं। हजारों वर्षों से वह लुप्त है, तब उसको पुनः प्रतिष्ठित करने में समय, श्रम, सबके सहयोग व बलिदान की आवश्यकता तो होगी ही।** क्या हमारे राष्ट्रवासी व राजनैतिक नेतृत्व इसके लिए तैयार हैं?

यहाँ कोई यह प्रश्न कर सकता है कि क्या देश को विदेशी शिक्षा से तत्काल मुक्त करने का साहस कोई कर सकता है? हम इसके उत्तर में यही कहना चाहेंगे कि ऐसा करना कदापि सम्भव नहीं है, क्योंकि वर्तमान में हमारे पास कोई विकल्प ही नहीं है, लेकिन आचार्य जी के वैदिक विज्ञान से उसी विकल्प का बीज बोया जा रहा है, जिसे फलने में 50-100 वर्ष अवश्य ही लगेंगे। **यदि देश ने साथ**

नहीं दिया, तो यह बीज बंजर भूमि में बोये बीज की भांति धीरे-2 नष्ट हो जायेगा। कोई महानुभाव यहाँ यह प्रश्न उठा सकते हैं कि क्या भारत में अंग्रेजी भाषा का अध्ययन बन्द कर देना चाहिए? नहीं, हमारा यह मन्तव्य कदापि नहीं है। हमें केवल अंग्रेजी ही नहीं अपितु जर्मन, फ्रेंच, रूसी, चीनी, जापानी, हिब्रू, डच, अरबी, उर्दू आदि विश्व की अनेक भाषाओं का भी अध्ययन करना चाहिए परन्तु किसी विदेशी भाषा को यह अधिकार कदापि नहीं देना चाहिए कि वह हमारी हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को अपनी दासी बना ले। हमें विदेशी विज्ञान व तकनीक का भी अध्ययन करना चाहिए परन्तु अपने महान् विज्ञान के हजारों वर्षों से बन्द कपाटों को खोलने के कार्य को भी पूर्ण महत्व देना चाहिए। हमें विदेशी वैज्ञानिकों व अन्य महापुरुषों को सम्मान अवश्य देना चाहिए परन्तु अपने महान् पूर्वज देवों व ऋषियों को तिरस्कृत करने का पाप करके नहीं।

ध्यान रहे, विश्व की हर माता (महिला) हमारी आदर की पात्र है परन्तु अपनी जन्मदात्री मां का चीर हरण करके नहीं। कोई अन्य माता हमारी जननी मां को अपनी दासी बनाये अथवा उसे मार डाले, यह किसी भी मां के पुत्र के लिए मृत्यु के समान होगा। इस यथार्थ को भारत का प्रत्येक प्रबुद्ध हृदय से समझने का प्रयास करे।

हमारे प्यारे देशवासियो, विशेषकर राष्ट्र व समाज के प्रबुद्ध विचारको एवं होनहार युवापीढ़ी! यदि आपके अन्तर्हृदय के किसी कोने में राष्ट्रिय स्वाभिमान वा आत्मसम्मान का तनिक भी अंश विद्यमान है, तो उसे जगाओ, आपके सम्मुख ऐसा स्वर्णिम अवसर विद्यमान है, जो आपके राष्ट्रिय वा आत्मसम्मान को एक अपूर्व ऊर्जा प्रदान कर सकता है। देश के पूंजीपति भामाशाहो! आज फिर आचार्य जी जैसे इस क्षेत्र के महाराणा प्रताप के समक्ष इस महान् राष्ट्र यज्ञ में अपना पवित्र धन समर्पित करने की घड़ी समुपस्थित है। आइये! इस देश का भविष्य बचा लीजिये अन्यथा इस राष्ट्र के भविष्य को बचाने वाला पता नहीं कब पैदा होगा? आप जरा विचारें, इस देश को स्वतन्त्र कराने में महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूप से प्रेरित स्वामी श्रद्धानन्द, श्याम कृष्ण वर्मा, लाला लाजपतराय, भगतसिंह, ठा. रोशनसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, राजगुरु, सुखदेव, वीर

सावरकर, चन्द्रशेखर आजाद, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस आदि कितने क्रान्तिकारियों ने अपना सर्वस्व इस राष्ट्रयज्ञ में आहुत कर दिया। जरा विचारो कि क्या हम उन महान् क्रान्तिकारियों के आत्मा को ऐसा बौद्धिक-मानसिक दास भारत दिखाकर सन्तुष्ट कर रहे हैं? क्या हम इस राष्ट्रयज्ञ में अपनी कुछ आहुति नहीं दे सकते? सोचो! क्या कर्तव्य है हमारा?

“ मेरे प्यारे देशवासियो! यदि आप मुझे अपना साथ दें, तो मैं आपको बौद्धिक दासता से मुक्त कराकर विश्वगुरू एवं अखण्ड भारत के निर्माण का मूलमंत्र देने का प्रयास करूंगा।

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

“ मुझे किसी कम्यूनिस्ट या वैज्ञानिक से सर्टिफिकेट लेने की आवश्यकता नहीं है कि ईश्वर है। मैं ईश्वर को भौतिकी के माध्यम से किसी भी निष्पक्ष मंच पर सिद्ध करने के लिए तैयार हूँ।

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

“ जब संसार के नागरिक व्यक्तिगत, पारिवारिक, कथित जातीय, सांप्रदायिक, क्षेत्रीय स्वार्थों से ऊपर उठकर समग्र संसार के स्थायी व दूरगामी हित को वरीयता दें। जब संसार के सभी नागरिक अपने कर्तव्य तथा दूसरों के अधिकारों की रक्षा में प्रवृत्त हो जायें, तभी संसार बच सकेगा और संसार के बचने से ही हम सब बच सकेंगे अन्यथा हम सब समाप्त हो जाएंगे।

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

7. ऐतरेय ब्राह्मण का भाष्य क्यों?

1. ब्राह्मण ग्रन्थ ही वेद के सर्वाधिक निकट तथा उसे समझने के आधार का ग्रन्थ हैं।
2. ऐतरेय ब्राह्मण सभी ब्राह्मण ग्रन्थों में सबसे पुरातन व जटिल ग्रन्थ है।
3. ब्राह्मण ग्रन्थों के मिथ्या अर्थों के कारण संसार में पशुबलि, नरबलि, मांसाहार, नशा, महिला एवं शूद्र के प्रति हीन भावना आदि पापों का उदय हुआ और इन पापों के लिए वेदादि शास्त्रों को उत्तरदायी ठहराया गया।
4. विश्व के विभिन्न सम्प्रदायों में ये पाप यहीं से फैले। इस कारण भारतीय प्राचीन इतिहास का भी अपयश हुआ।
5. वेद व ब्राह्मण ग्रन्थों का महान् विज्ञान सर्वत्र लुप्त हो गया।

इन सब कारणों से ही महर्षि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों से संकेत पाकर आपने ऐतरेय ब्राह्मण का वैज्ञानिक व्याख्यान करने का व्रत लिया, क्योंकि इससे ही वेद का विशुद्ध विज्ञान प्रकाशित होकर वेदादि शास्त्रों एवं भारतीय इतिहास पर लगी मिथ्या आरोपों को दूर किया जा सकता है।

“ वैदिक विज्ञान आधुनिक विज्ञान का विरोधी नहीं बल्कि आधुनिक विज्ञान की वास्तविक एवं अनसुलझी समस्याओं का समाधान करने में सहायक है।

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

8. 'वेदविज्ञान-आलोक' ग्रन्थ की महती उपादेयता

वेद संसार के सबसे प्राचीन एवं सनातन ग्रन्थ हैं। इन्हें समझने के लिए प्राचीन ऋषियों ने इनके व्याख्यान रूप अति महत्वपूर्ण ग्रन्थ, ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना की। इनमें ऋग्वेद का ब्राह्मण ग्रन्थ महर्षि ऐतरेय महीदास जी द्वारा लगभग ७००० वर्ष पूर्व रचा गया, इसका नाम ऐतरेय ब्राह्मण है। यह ब्राह्मण ग्रन्थ सबसे प्राचीन ब्राह्मण ग्रन्थ है। ब्राह्मण ग्रन्थों की भाषा अति जटिल व सांकेतिक होने से ये ग्रन्थ सदैव रहस्यमय रहे। देश व विदेश के प्रायः सभी भाष्यकारों ने इनकी कर्मकांडपरक व्याख्या की। पूज्य आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक ने इस ग्रन्थ का संभवतः विश्व में प्रथम बार वैज्ञानिक भाष्य किया है। इस भाष्य का नाम वेदविज्ञान-आलोकः है, जो चार भागों में २८०० पृष्ठों में प्रकाशित हुआ है। **वेदविज्ञान-आलोकः** केवल सृष्टि उत्पत्ति का ही विज्ञान नहीं, बल्कि सृष्टि विज्ञान के विभिन्न पक्षों यथा- astrophysics, cosmology, quantum field theory, string theory, particle physics, atomic and nuclear physics आदि का विवेचक ग्रन्थ है। यदि इस ग्रन्थ पर शीर्ष वैज्ञानिक हमारे साथ मिलकर कार्य करें तो, आधुनिक विज्ञान को एक नई दिशा मिलने के साथ ही भौतिक विज्ञान की अनेकों अनसुलझी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। इसके साथ ही राष्ट्र और विश्व की अनेकों सामाजिक समस्याएँ भी सुलझ जायेंगी।

इस ग्रन्थ में हम जान सकते हैं कि-

1. यथार्थ (वैदिक) Dark Matter व Dark Energy क्या हैं? इनका स्वरूप क्या है? यह कैसे बनती है? सृष्टि प्रक्रिया में इनका क्या योगदान है?
2. Force क्या हैं? ये सर्वप्रथम कैसे उत्पन्न होते हैं? कितने प्रकार के हैं? Unified Force क्या है?

ऊर्जा क्या है? इसका स्वरूप क्या है? यह सर्वप्रथम कैसे उत्पन्न होती है? इसके अवशोषण, उत्सर्जन एवं पारस्परिक रूपान्तरण का क्रियाविज्ञान क्या है?

3. विभिन्न Quantas (Photon, Graviton etc.) कैसे बनते हैं? उनकी संरचना, स्वरूप व व्यवहार क्या है?
4. Space क्या है?, कैसे बनता है?, किससे बनता है? सृष्टि में इसका क्या योगदान है? उसके वक्र होने व फैलने का क्या विज्ञान है?
5. जिन्हें संसार मूल कण मानता है, उनके मूल पदार्थ न होने कारण तथा इनके निर्माण की प्रक्रिया क्या है?
6. अनादि मूल पदार्थ से सृष्टि कैसे बनी? प्रारम्भ से लेकर तारों तक के बनने की विस्तृत प्रक्रिया क्या है? Big Bang Theory क्यों मिथ्या है? क्यों Universe अनादि नहीं है, जबकि इसका मूल पदार्थ अनादि है?
7. काल (Time) क्या है? Universe में इसकी क्या भूमिका है? इसकी उत्पत्ति कैसे होती है? इसका निर्माण किस पदार्थ से होता है?
8. वर्तमान विज्ञान में कल्पित Vacuum Energy का वास्तविक स्वरूप क्या है?
9. वेद मंत्र इस ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्याप्त विशेष प्रकार की तरंगों (Vibrations) के रूप में ईश्वरीय रचना हैं। ये कैसे उत्पन्न होते हैं? इनकी सृष्टि में क्या भूमिका है?
10. इस ब्रह्माण्ड में सर्वाधिक गतिशील पदार्थ कौनसा है?
11. सर्वप्रथम द्रव्यमान की उत्पत्ति कैसे होती है?
12. गैलेक्सी और तारामंडलों के स्थायित्व का यथार्थ विज्ञान क्या है?
13. वैदिक पंचमहाभूतों का स्वरूप क्या है?
14. संसार में सर्वप्रथम भाषा व ज्ञान की उत्पत्ति कैसे होती है?
15. भौतिक और अध्यात्म विज्ञान, इन दोनों का अनिवार्य सम्बंध क्या व क्यों है?
16. सृष्टि उत्पत्ति व संचालन आदि में चेतन पदार्थ ईश्वर की क्यों अनिवार्य भूमिका है?
17. मरुत् व प्राण रश्मियों की संरचना, स्वरूप एवं उनका क्रियाविज्ञान क्या है?

18. strong nuclear force का प्रभाव क्षेत्र अति न्यून तथा वि.चु. बल एवं गुरुत्व बल का प्रभाव क्षेत्र अति विस्तृत क्यों होता है?

19. सृष्टि एवं प्रलय का क्रिया विज्ञान क्या है?

20. द्रव्यमान, विद्युत् आवेश जैसे मौलिक गुणों की उत्पत्ति व स्थिति का क्या विज्ञान है?

21. ईश्वर तत्त्व का वैज्ञानिक स्वरूप एवं उसके कार्य करने का mechanism क्या है?

22. प्राकृतिक ऋषि पदार्थ किस प्रकार की रश्मियों को कहते हैं और उनकी इस सृष्टि में क्या भूमिका है?

23. वेदमंत्रों के देवता, स्वर व छन्दों की सृष्टि विज्ञान में क्या भूमिका है?

24. 'ओम्' ईश्वर का मुख्य नाम क्यों है? इस नाम की रश्मि इस सृष्टि में क्या कार्य करती है? उसका सम्पूर्ण क्रियाविज्ञान क्या है?

25. वेद क्यों ब्रह्माण्डीय ग्रन्थ तथा वैदिक धर्म क्यों ब्रह्माण्डीय प्रबुद्ध प्राणियों का एकमात्र धर्म है?

26. किसी भी आर्ष ग्रन्थ में प्रक्षिप्त भागों को जानने की क्या कसौटी है?

27. वेद तथा आर्ष ग्रन्थों के भाष्य की वैज्ञानिक सनातन परम्परा क्या है?

28. हमारे ऋषियों की प्रज्ञा की प्रामाणिकता का कारण क्या है? क्यों संस्कृत भाषा का स्वरूप व विज्ञान ब्रह्माण्ड में सर्वोपरि है?

29. भारतवर्ष के पुनः जगद्गुरु बनने तथा सम्पूर्ण विश्व के कल्याण का मूल व स्थायी उपाय क्या है?

ऐसे ही अनेकों प्रश्नों के उत्तर आपको इस ग्रन्थ में मिलेंगे। आचार्य जी द्वारा किए जा रहे निरुक्त भाष्य के विषय में हम यह कहना चाहते हैं कि निरुक्त का यह भाष्य अन्य उपलब्ध भाष्यों से सर्वथा विशिष्ट होगा, जो वेद एवं ब्राह्मण ग्रन्थों के गम्भीर वैज्ञानिक रहस्यों को खोलने में आधार का कार्य करेगा।

हम देश तथा विश्व के वैज्ञानिकों, अन्य प्रबुद्ध जनों, मानवतावादियों, वेद भक्तों, देशभक्तों, राजनेताओं, उच्च अधिकारियों, शिक्षाविदों, मीडिया कर्मियों, युवा विद्यार्थियों, उद्योगपतियों, व्यापारियों, समाजसेवियों, धर्माचार्यों (पण्डितों, साधु-संन्यासियों, मौलवियों, पादरी महानुभावों, सिख पंथ के विद्वानों, बौद्ध-जैन-साधुओं आदि) प्रबुद्ध नास्तिकों के अतिरिक्त कृषकों व श्रमिकों का विनम्र आह्वान करते हैं कि वे अपने-२ विचारों वा पूर्वाग्रहों की समीक्षा करके पूज्य आचार्य जी के इस कार्य पर हृदय की गहराइयों एवं प्रखर मेधा के साथ गम्भीर चिन्तन करके मानव जाति को सत्य विज्ञान व यथार्थ अध्यात्म के द्वारा आनन्द की छाया में जीने के मार्ग पर चलने का संकल्प लें। आशा है सभी इस पर सहृदयता से विचार करेंगे-

समस्त न्यासी गण
श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास

'वेदविज्ञान-आलोक' अब उपलब्ध है-

वेद ऋषि www.vedrishi.com & Available at amazon

9. निरुक्त का भाष्य क्यों?

1. ब्राह्मण ग्रन्थों के पश्चात् निरुक्त ही वेद के सर्वाधिक निकट तथा उसे समझने का आधार ग्रन्थ है।
2. निरुक्त के निर्वचनों के यथार्थ वैज्ञानिक स्वरूप को न समझ पाने के कारण इस समय उपलब्ध भाष्यों में से कोई भी भाष्य वेद के यथार्थ एवं वैज्ञानिक स्वरूप को प्रकाशित करने में समर्थ नहीं है।
3. निरुक्त के निर्वचनों का उपहास न केवल विदेशी भाष्यकारों ने किया है, अपितु कुछ वैदिक विद्वान् भी अपने पाण्डित्य के अहंकारवश कुछ निर्वचनों का उपहास करते देखे जाते हैं।
4. निरुक्त के यथार्थ विज्ञान के अभाव के कारण ही महान् ज्ञान-विज्ञान के दिग्दर्शक ब्राह्मण ग्रन्थों को आज तक समझा नहीं जा सका है।
5. निरुक्त के वर्तमान उपलब्ध सभी भाष्यों में नरबलि, स्त्री व पुरुषों का दान-विक्रय एवं त्याग के साथ साथ अश्लीलता के संकेत भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं। यहाँ तक कि निरुक्त के प्रसिद्ध एवं प्रामाणिक टीकाकार आचार्य दुर्ग भी इन पापों से बच नहीं पाए हैं। इन्हीं कारणों से अनेक वेद एवं राष्ट्र विरोधी कथित प्रबुद्ध लोग वेदादि शास्त्रों पर निरन्तर तीक्ष्ण प्रहार कर रहे हैं, जिनका उत्तर देने में प्रायः सभी वैदिक विद्वान् स्वयं को असमर्थ पाकर मौन साधने को विवश हैं।

इन सब कारणों से आज कोई भी वैदिक विद्वान् वर्तमान विज्ञान के समक्ष कुछ भी बोलने का साहस नहीं कर पा रहा। इसलिए बाजार में अनेक भाष्यों के उपलब्ध रहते हुए भी आचार्य जी को ऐतरेय ब्राह्मण की भाँति निरुक्त का भी वैज्ञानिक भाष्य करने को विवश होना पड़ा है।

10. आचार्य जी का कार्य मेरी दृष्टि में

ऐतरेय ब्राह्मण ऋग्वेद का ब्राह्मण ग्रन्थ है, ऋग्वेद ज्ञान काण्ड का ग्रन्थ माना जाता है। **ऐतरेय ब्राह्मण को समझे बिना ऋग्वेद को पूर्णतः समझा नहीं जा सकता।** पूज्य आचार्य जी ने इस गम्भीर, रहस्यमय और जटिल ग्रन्थ को समझकर, इसका आधिदैविक भाष्य (वैज्ञानिक भाष्य) पूर्ण करने के साथ ही अपने संकल्प (...विश्व के विकसित देशों के वैज्ञानिकों के मध्य वेद की अपौरुषेयता (ईश्वरीयता) व वैज्ञानिकता को सिद्ध कर दूंगा। इस हेतु वैदिक विज्ञान के माध्यम से वर्तमान भौतिक विज्ञान को नयी दिशा देने का यत्न करूंगा।) का एक सबसे महत्त्वपूर्ण चरण पूर्ण कर लिया था। इसके दूसरे व अन्तिम चरण को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के विज्ञान संकाय में आयोजित सैमीनार में पूर्ण कर दिया था, इसकी घोषणा प्रख्यात आर्य विद्वान् पूज्य आचार्य श्री सत्यानन्द जी वेदवागीश ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान मान्यवर श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य, प्रख्यात आर्य नेता व भामाशाह मान्यवर श्री दीनदयाल जी गुप्ता तथा पचासों आर्यजनों के मध्य वाराणसी के भोजूबीर आर्य समाज में कर दी थी। ध्यातव्य है कि ये सभी महानुभाव उस सेमीनार में भी उपस्थित थे।

अब तक की उपलब्धियां

1. Big Bang Theory को वैदिक सिद्धांतों से अपनी पुस्तक में मिथ्या सिद्ध किया। उसके बाद **BARC** के वैज्ञानिक **डॉ. आभास कुमार मित्रा** जी ने अपने Research paper में Big Bang Theory को मिथ्या सिद्ध करके उसकी जगह Eternal Universe की नई अवधारणा को विश्व में प्रस्तुत किया।
   (ध्यातव्य है कि Google द्वारा निकाली गयी अब तक के Top 20 Indian Physicist की लिस्ट में मित्रा साहब का भी नाम है।)
2. पूज्य आचार्य जी के द्वारा **स्टीफन हॉकिंग** को लिखे गए पत्र के बाद उन्होंने अपनी Big Bang Theory, जिसमें वे Zero volume में infinite energy मानते थे, में संशोधन किया।

3. आचार्य जी ने ऋग्वेद के **"ऐतरेय ब्राह्मण"** का वैज्ञानिक भाष्य 'वेदविज्ञान-आलोकः' नाम से प्रकाशित हुआ, जो कि विश्व में सर्वप्रथम हुआ है।
4. आचार्य जी ने भारत व विश्व के कई वैज्ञानिकों, जैसे- **स्टीफन हॉकिंग** तथा अनेकों प्रतिष्ठित संस्थाओं, जैसे- **NASA, CERN** को पत्र लिखे एवं आधुनिक विज्ञान की गम्भीर समस्याओं पर 12 प्रश्न पूछे परन्तु उनका समाधान किसी के पास नहीं मिला, जबकि उन प्रश्नों का समाधन आचार्य जी के ग्रन्थ से मिल जाता है।

इन प्रश्नों पर चर्चा के दौरान **डॉ. आभास मित्रा** जी ने कहा- **"इनमें से कुछ प्रश्नों का उत्तर वर्तमान विज्ञान 100 वर्षों में भी नहीं दे सकेगा।"**

5. एक तरफ हजारों वैज्ञानिक CERN प्रयोगशाला में खोज में लगे हैं, वहीं दूसरी ओर आचार्य जी अकेले कठिन परिश्रम कर रहे हैं। पूज्य आचार्य जी ने दावा किया था कि वे सर्न के वैज्ञानिकों से पहले यह सब खोज लेंगे और ऐसा हुआ भी।
6. नोबल पुरस्कार विजेता भी आचार्य जी के प्रश्नों से अभिभूत होकर अपनी असमर्थता को स्वीकार कर रहे हैं।
7. यू-ट्यूब पर आचार्य जी के Vaidic Physics चैनल से लगभग 31 हजार युवा जुड़े हैं तथा लगभग 37 देशों के युवा आचार्य जी को सुनते हैं।

मैं मार्च, 2016 से आचार्य जी के सानिध्य में रहा हूँ। मैंने वर्तमान theoretical physics को गहराई से पढ़ा व समझा है। सौभाग्य से आचार्य जी के **"वेदविज्ञान-आलोकः"** नामक महान् ग्रन्थ के सम्पादन एवं सम्पूर्ण साज-सज्जा (Design) का दायित्व मुझे सौंपा गया था। इस कारण मैंने इस ग्रन्थ का अध्ययन किया तथा पुस्तक के लिए अनेक महत्वपूर्ण Diagrams बनाये। मैं वर्तमान भौतिक विज्ञान तथा आचार्य जी के इस वैदिक विज्ञान की तुलना करता हूँ, तो अनुभव करता हूँ कि आधुनिक विज्ञान अपूर्ण है अर्थात् उसमें परिवर्तन आते रहते हैं, जबकि वैदिक विज्ञान स्थिर और पूर्ण है, इस कारण आधुनिक विज्ञान को वैदिक विज्ञान के मार्गदर्शन की

अति आवश्यकता है। यह ग्रन्थ आधुनिक वैज्ञानिक जगत् के लिये एक प्रकाश स्तम्भ का कार्य करेगा, साथ ही उसे आध्यात्म विज्ञान से भी अनिवार्य रूप से जोड़ा जा सकेगा।

मेरे अनुसार इस भाष्य के द्वारा–

1. ईश्वर का वैज्ञानिक स्वरूप एवं उसकी सत्ता सिद्ध होती है।
2. ईश्वर सृष्टि की प्रत्येक क्रिया को कैसे संचालित करता है, यह प्रकट होता है।
3. 'ओम्' ईश्वर का मुख्य नाम क्यों है? इसकी ध्वनि इस ब्रह्माण्ड में क्या भूमिका निभाती है? यह ज्ञात होता है।
4. वैदिक ऋचाओं का वैज्ञानिक स्वरूप एवं इससे सृष्टि के उत्पन्न होने की प्रक्रिया ज्ञात होती है।
5. सृष्टि उत्पत्ति के प्रारम्भिक चरण से लेकर तारों तक के बनने की प्रक्रिया समझायी जा सकती है।
6. ग्रहों की गति व कक्षाओं के स्थायित्व पर एक सार्वभौमिक नियम स्थापित होता है, जो ब्रह्माण्ड के सभी ग्रहों पर लागू होता है।
7. आधुनिक विज्ञान मानता है कि प्रकाश से अधिक गति किसी भी पदार्थ की नहीं हो सकती, लेकिन यह ग्रन्थ एक ऐसा पदार्थ बताता है, जिसकी गति प्रकाश से अधिक एवं 12 लाख km/s है।।
8. वेद के विद्वान् वर्तमान में वेद एवं आर्ष गन्थों के विज्ञान से नितान्त अनभिज्ञ हैं। वेद विज्ञान अनुसंधान की जो परम्परा महाभारत के पश्चात् लुप्त हो गयी थी, वह इस भाष्य से पुनर्जीवित होती है।
9. संस्कृत भाषा, विशेषकर वैदिक संस्कृत को ब्रह्माण्ड की भाषा सिद्ध की गयी है।
10. भारत विश्व को एक सर्वथा नयी परन्तु वस्तुतः पुरातन, अदभुत वैदिक फिजिक्स दे सकेगा, इसके साथ ही वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के पठन-पाठन परम्परा को भी नयी दिशा मिल सकेगी।
11. संसार को एक नई Theory (Vaidic Rashmi Theory) दे सकते हैं। Vaidic Rashmi Theory में वर्तमान की सभी Theories के गुण तो होंगे परन्तु उनके दोष नहीं हैं।

12. ब्रह्माण्ड के सबसे जटिल विषय Force, Time, Space, Gravity, Graviton, Dark Energy, Dark Matter, Mass, Vacuum Energy, Mediator Particles आदि के विज्ञान को विस्तार से समझा सकते हैं।

13. Einstein से प्रारम्भ हुई Unified Field Theory की खोज को पूर्ण कर सकते हैं।

14. आज Particle Physics असहाय स्थिति में है। हम वर्तमान Elementary Particles व Photons की संरचना व उत्पत्ति प्रक्रिया को समझा सकते हैं।

15. वैज्ञानिकों के लिए 100-200 वर्षों के लिए अनुसंधान सामग्री दे सकते हैं।

16. सृष्टि उत्पत्ति की सर्वाधिक प्रचलित Theory, Big-Bang Theory सहित अन्य Theories का खण्डन करके Vaidic Theory of Universe को स्थापित कर सकते हैं।

17. सुदूर भविष्य में एक अद्‌भुत भौतिकी का युग प्रारम्भ हो सकेगा, जिसके आधार पर विश्व के बड़े-२ टैक्नोलॉजिस्ट नवीन व सूक्ष्म टैक्नोलॉजी का विकास कर सकेंगे।

18. प्राचीन आर्यावर्त (भारतवर्ष) में देवों, ऋषियों, गन्धर्वों आदि के पास जिस टैक्नोलॉजी के बारे में सुना व पढ़ा जाता है, उसकी ओर वैज्ञानिक अग्रसर हो सकेंगे।

19. विज्ञान की विभिन्न शाखाओं यथा- रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, आयुर्विज्ञान आदि का मूल भौतिक विज्ञान में ही है। इस कारण वैदिक भौतिकी के इस अभ्युदय से विज्ञान की अन्य शाखाओं के क्षेत्र में भी नाना अनुसंधान के क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तन आ सकेगा।

20. इससे वेद तथा ऋषियों की विश्व में प्रतिष्ठा होकर भारत वास्तव में जगद्‌गुरु बन सकेगा।

21. हमारा अपना विज्ञान अपनी भाषा में ही होगा, इससे भारत बौद्धिक दासता से मुक्त होकर नये राष्ट्रीय स्वाभिमान से युक्त हो सकेगा।

22. इससे जाति, साम्प्रदायिक, भाषा और क्षेत्रवाद की संकुचित मानसिकता से मुक्त होकर नये उत्साह के साथ सबके साथ

मिलकर इस राष्ट्र को आगे बढ़ायेंगे तथा विश्वबंधुत्व का भी विश्व में उद्घोष गूंजेगा।

23. अज्ञानतावश राष्ट्रविरोधी बने प्रबुद्धों को भी अपनी भूलों का बोध हो सकेगा।

24. इस कारण भारतीयों में यथार्थ देशभक्ति का उदय होकर भारतीय प्रबुद्ध युवाओं में राष्ट्रीय एकता का प्रबल भाव जगेगा।

25. यह ग्रन्थ भारतवर्ष को धीरे-२ बौद्धिक दासता से मुक्त कर बौद्धिक स्वतंत्रता की ओर ले जाने के लिए सुदृढ़ आधारशिला का काम करेगा।

मेरे प्यारे भाइयो और बहनो! इन उपर्युक्त २५ बिन्दुओं को पढ़कर आप को निश्चित रूप से विश्वास हो जाएगा कि **"वेदविज्ञान-आलोकः"** नामक ग्रन्थ, जो मेरे अनुसार इस समय धरती की सबसे बड़ी बौद्धिक सम्पदा है, को यदि हमारा देश और पुनः सम्पूर्ण विश्व समझ जाये, तो इस देश व विश्व का भाग्य दूर तक प्रभावित हो सकता है।

वर्तमान में किए जा रहे निरुक्त भाष्य के विषय में मेरा मानना है कि आचार्य जी ने अभी निरुक्त के प्रथम अध्याय का ही भाष्य किया है। इसे देखकर मैं अनुभव करता हूँ कि हमें वेदों और ऋषियों का अतिसूक्ष्म, अत्यन्त गम्भीर, अद्भुत तथा वर्तमान विद्वानों एवं वैज्ञानिकों के लिए अकल्पनीय ज्ञानविज्ञान पूज्य आचार्य जी के निरुक्त भाष्य के माध्यम से भविष्य में प्राप्त होने वाला है।

इस महान् कार्य को अभी यह छोटा सा संस्थान अपने अति सीमित संसाधनों के बल पर करने का प्रयास कर रहा है। मैं इसमें आप सभी के हर प्रकार के सहयोग की अपेक्षा करता हूँ।

पूज्य आचार्य जी ने अपना कार्य लगभग पूर्ण कर दिया है, अब हमारा परम कर्तव्य है आगे बढ़ाने का। मुझे आशा है कि आप मेरी बातों को गम्भीरता से लेंगे तथा इस महान् अनुसंधान कार्य को विश्वव्यापी बनाने में अपना तन, मन, धन से सहयोग करेंगे।

भावी योजनाएं

1. अब समय आ गया है कि उस वैदिक ज्ञान विज्ञान को फिर से विश्व में प्रतिष्ठित करके भारत को एक नई परन्तु सनातन वैदिक ज्ञान विज्ञान की शिक्षा देकर भारत में एक नई शिक्षा नीति एवं बौद्धिक स्वतंत्रता की नींव रखी जाए, जिससे भारतीयों में राष्ट्रीय स्वाभिमान जाग सके।
2. जहाँ पर शोधार्थी पूज्य आचार्य जी के मार्गदर्शन में 'वेदविज्ञान-आलोकः' नामक ग्रन्थ पर शोध करके वर्तमान भौतिकी की शैली से प्रयोगों व गणितीय व्याख्या की सम्भावनाओं को खोजें।
3. जहाँ पर व्याकरण आदि शास्त्रों के विद्वान् वर्तमान विज्ञान का अध्ययन करके अन्य शास्त्रों का इसी शैली में वैज्ञानिक भाष्य करने का प्रयास करें।
4. दोनों ही प्रकार के विद्वान् परस्पर मिलकर वेद एवं राष्ट्र की विरोधी विश्व की आसुरी शक्तियों के साथ ज्ञानयुद्ध करें।
5. वैदिक भौतिकी की भांति विज्ञान की अन्य शाखाओं में भी अनुसंधान का प्रयास करना।
6. यहाँ पर दीक्षित वैदिक विद्वान् वाल्मीकीय रामायण, महाभारत आदि ऐतिहासिक आर्ष ग्रन्थों में हुई मिलावटों को दूर करके इनके शुद्ध संस्करण तैयार करें।
7. इन सब कार्यों के द्वारा यहाँ के वैदिक वैज्ञानिक और विद्वान् आर्यावर्त (भारत) के प्राचीन महान् गौरव की पुनः प्रतिष्ठा के साथ-साथ सम्पूर्ण विश्व एवं प्राणिमात्र के कल्याण का संकल्प लें।
8. इसके लिए सरकार से मान्यता प्राप्त करने का प्रयास करना तथा मासिक अथवा त्रैमासिक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाना।

विशाल आर्य, उपाचार्य
(M.Sc. in Theoretical Physics, University of Delhi)

11. सोशल मीडिया से प्राप्त कुछ महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ

Roger Skunk - Mr Agnivrat these guys are completely scared from your theory. They are afraid that if you will get International Recognition then their fake big bang, string theory will be scrapped. Their income sources will be blocked, by showing false theories they raising million of funds from fundraiser. e.g. :- they made large hadron collider by raising funds and fooling investors. Though by colliding atoms in hadron collider they didn't achieved anything. They scared that all religions, their theories everything will be scrapped and everyone will focus on vedic theory. Everyone will start believing Vedas also. So, in short they won't recognise your theory, they will abuse you, they will do anything to stop you, well now i have to say that they can even make plans to Kill you also. Inside they know that 4000 years ago India had such high level sages (scientists), intellectuals etc that can't be compared from present scientists. They will never change their course, education structure, all they teach is that west was far superior from indians. Think open minded what happened with shivkar Bapuji Talpade when he made aircraft named "Marutsakha" (before wright brothers) from old papers of Viman Shastra.. he was arrested, harresed, mentally tortured. He had also made half working prototype of mercury combustion engine. In ancient texts we knew that Pushpak Viman fuel was Mercury. Just Think what we read in school that aircraft was invented by Wright Brothers. So i think

you can understand, you are wise man. Soon i will mail you solution for all this mess which you are facing from those bastards. Till then don't eat or drink anything from outside or from someone else (even if he/she is your great friend) until and unless you physically watch their preparation. Just remember money can seduce anyone. How rajiv Dixit died, what he consumed. What was consumed by lal Bahadur Shastri, what was mixed by cook of Dayanand Saraswati..... You know that, you are wise man....!!!

Anuj rathi - आचार्य जी नमस्ते,,,अगर स्वामी दयानंद जी आज आपको देख सकते तो उन्हें आपके ऊपर गर्व होता। आर्य समाज और वैदिक संस्कृति सदैव आपके ऋणी रहेंगे। धन्यवाद

Hindi fact tv - मैं वेद पुराण में विश्वास नहीं करता था पर मेरा दोस्त जो सर्न लेबोरेटरी में कार्य करता है, उसने बताया कि आप वेदो को इस विज्ञान से समझें, फिर उसने आपका चेनल बताया, अब मुझे पूरा यकीन है। he also see your channel.

Ashwani Kumar - Swami ji......I feel so proud to be a Bharatia because of people like you. I watched this yours video a few months back. But today (7/06/2019), I read a news in TOI that a team of scientist from Oxford University, Northwestern University and University of Amsterdam said that "the black hole is not really a hole." Moreover, the theory given by them was almost similar to what you are saying here. I do not know that how and when you & our ancestors will get the true credit for magnificent work done. But please keep going and keep doing this wonderful work. I hope one day we will again reclaim what is ours at

least in the minds of this and next coming generation. Thanks! TC

Sangeeta Pathak - मैं हतप्रभ हूं यह जान कर कि ऐतरेय ब्राह्मण जैसे ग्रन्थों में इतना विज्ञान भरा है। और धन्य हैं ऋषिवर आप भी जो यह सब समझ पाए। हमें गर्व है आप पर। आप सचमुच महान् हैं।

Sharda Meena - आचार्य अग्निव्रत जी...आज आपकी **नास्तिकतावाद को सीधी चुनौती** यू-टुब पर देखि सुनी और यथाशक्ति समझी....
वर्तमान समय सभी प्राचीन आदिवासी भारत माता के आप जैसे सुशिक्षित सच्चे आचार्यों को निर्लोभी निरहंकारी ऋषि मुनियों को चारों दिशा के चार धर्मगुरुओं को पुनः सूर्यवंशी भारत को अखंड जगतगुरु बनवाने में एक बार फिर से संगठित होना है....
एक मुसाफिर की परिकल्पना....

आदर्श आदिवासी मीणा समाज
अल्पसंख्यक

Ved Ved - Is gyan ka 10% v yadi koi american researcher de deta to use waha puri surakchha, behtar promotion aur na jane kon kon se prize mil jata, lekin inko yaha kitno ki kaisi kaisi bate , aur to aur inko nasa ki tarf se v pareshan kiya jata jai, bahut dukh ki baat hai, inko pahle security milni chahiye

Sagar Kumar - Aaj se hm aastik ban gaye I m student of p-HD of biology aur hm naastik ban chuke the 2010 mein Lenin hm phir se aaj aastik ban gaye

Anand Kumar - धन्य हो आचार्य, वेदों के ६००० साल के आस्तित्व होते हुए भी कोई इन्हें पढ़ के डिकोड नहीं कर पाया। पहली बार कोई विद्वान् जन्म लिया है, अब भारत फिर विश्वगुरु होगा।

Mayank Kirti -Mai aapke bataye hue gyan pe research bhi kar raha hu aur ise materialy sidh bhi karne ka prayas kar raha hu. Ultrasonic waves pe aapke theory ke anusar mai research kar raha hu. Abhi tak maine temperature difference ko observe kiya hai aur research abhi jaari hai

Vijay Krishna - आचार्य जी, आपका जो विरोध हो रहा है वह इस बात का प्रमाण है कि आपका वेद का वैज्ञानिक अर्थ बहुत ही प्रभावशाली है, जिससे सारे विज्ञान जगत् में तहलका मच गया है। जिन लोगों के स्वार्थ जुड़े हैं उनकी दुकानें बंद हो सकती हैं। अतः वो आपके विरुद्ध जहर उगलेंगे ही। आपको अपना कार्य निर्बाध करना चाहिये, ऐसा मैं सोचता हूँ

Uma Vng - आपका कार्य आर्य जगत् के लिये संजीवनी की भांति है। विश्व में फिर से वैदिक धर्म की स्थापना के लिये अत्यंत आवश्यक है, कृपया इसे बीच में ना छोड़ें

Sandeep Mokhra – गुरु जी मैं इंस्पेक्टर संदीप आपकी ये वीडियो दिखकर आज बड़ा दुखी हुवा की मैं एक जवान होने के साथ साथ एक अच्छा फायर मैन भी हूँ और कूटनीति भी अच्छे से जनता हूँ। इतना सब कुछ होने के बाद मैं अपने आप को असमर्थ महसूस कर रहा हूँ कि मैं आपकी कोई मदद नहीं कर सकता । यदि मैं अन्दर इतना सामर्थ्य होता तो मैं आज ही अपनी जॉब छोड़कर अपने हथियार के साथ आपकी प्रोटेक्शन करता । लेकिन समय इसकी इजाजत नहीं दे रहा । और इसके लिए हम अपने हूनर और जवानी पर शर्मिन्दा हैं कि हम अपने ही देश में हमारे

एक सच्चे संत की रक्षा नहीं कर सकते। अगर परिस्थिति थोड़ी और सही होती तो मैं चैलेंज के साथ बताता कि धमकी का जवाब कैसे देते हैं so sad today after see this video

Bad boy - आचार्य जी, आज आप का विरोध यही दर्शाता है कि आप के ग्रथों में बहुत दम है इसी लिए विधर्मियों में हाहाकार मच गया होगा।

Rajeev Saini - आश्चर्य है यह देश जीते जी अपने महानायकों को कभी उचित सम्मान नहीं देता और बाद में बस लकीर पीटता रहा, चाहे सुभाष चन्द्र बोस हों या आधुनिक महानायक श्री अग्निव्रत जी हों। आप के इस प्रयास के लिए आपका कोटि कोटि धन्यवाद आप सदैव स्वस्थ रहें और दीर्घ आयु को प्राप्त करें

Rituraj Arya - प्रणाम आचार्य जी ।धन्य हो आप और धन्य है आपकी जननी। धन्य है वह धरा, जिस पर आप जैसे देवीय गुण युक्त महापुरुष ने जन्म लिया है। आचार्य जी इस भारतवर्ष तथा संपूर्ण संसार को आपकी जरूरत है। आपकी वाणी का एक-एक पद अत्यंत सारगर्भित हैं, जब मैं आपकी वाणी को सुनता हूं , तो अत्यंत धीरता तथा मन से सुनता हूं। आचार्य जी, जी करता है आपको हर क्षण हर पल तथा हर घड़ी सुनता ही रहूँ। आप सुनाते सुनाते थक जाएं लेकिन मैं सुनता सुनता न थकूंगा। आचार्य जी बचपन से ही मेरी भारतीय धर्म दर्शन और ज्ञान में रूचि थी। किन्तु यह नहीं पता था कि भारत के पास ऐसी विज्ञान भी थी भारत के विज्ञान दर्शन और धर्म का जो दर्शन मैंने आपकी वाणी से किया है वह अन्यत्र दुर्लभ है। मैं अपने आप को धन्य मानता हूँ जो मैं आपके श्रीकंठों से भारत के असली ज्ञान विज्ञान को सुन पाया है धन्य हो गया । आज मैं अपने आपको अत्यंत भाग्यशाली समझ रहा हूं। मैकाले की शिक्षा पद्धति को हटाकर उसका विकल्प जो आपके मस्तिष्क में है आपके विचारों में है, वह अन्यत्र सर्वत्र दुर्लभ है। हम सबको साथ मिलकर चलना होगा। आप आदेश देते रहिए हम क्या करें। आप को कोटि-कोटि नमन।

मैं वैदिक भौतिकी के पुनरूत्थान जैसे इस महान् कार्य में किस प्रकार सहयोग कर सकता हूँ?

1. **सोशल मीडिया पर प्रचार करके** – हमारी पोस्ट को विभिन्न सोशल मीडिया पर अधिक से अधिक प्रचारित कर सकते हैं।
2. **स्वयं आर्थिक सहयोग करके एवं दूसरों से कराके** – आप अपने सामर्थ्य के अनुसार एवं न्यास की अनैतिक व्यवसाय से अर्जित धन न लेने की शर्त को ध्यान में रखते हुए हमारी वेबसाइट पर जाकर दान दे सकते हैं और अपने सगे सम्बन्धियों को इस राष्ट्रीय एवं वैदिक यज्ञ में आहुति देने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।
3. **हमारे साहित्य का प्रचार करके** – आप पूज्य आचार्य श्री की अत्यन्त महत्वपूर्ण पुस्तकों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचा कर।
4. **वैदिक भौतिकी पर कार्यक्रम आयोजित करा कर** – हमसे सम्पर्क करके अपने आसपास अति प्रबुद्ध, विशेषकर विज्ञान के उच्च स्तरीय छात्रों के मध्य करा सकते हैं।
5. **सोशल मीडिया, पत्रिका आदि में हमारे कार्य पर लेख लिख कर** – हमारे कार्य को अच्छी तरह से समझकर विभिन्न विषयों पर सरल भाषा में जनसाधारण के लिए सोशल मीडिया एवं पत्रिका आदि में लेख लिख सकते हैं।
6. **हमारे कार्य पर वीडियो बनाकर प्रचार करके** – हमारे कार्य को अच्छी तरह से समझकर विभिन्न विषयों पर सरल भाषा में जनसाधारण के लिए विडियो बना सकते हैं।
7. **बौद्धिक सहयोग दे कर** – नए मौलिक अनुसंधानों की जानकारी अथवा इस अद्भुत कार्य को आगे बढ़ाने हेतु सुझाव हमें मेल द्वारा दे सकते हैं।
8. **सरकारी सहायता के लिए प्रयास करके** – हमारे कार्य की जानकारी माननीय प्रधानमंत्री महोदय तक पहुँचा कर उनसे इस कार्य के लिए सहयोग और संरक्षण का निवेदन कर सकते हैं।

9. **हमारे वेद विज्ञान के अन्तिम लक्ष्य** – भारत और विश्व को वेदोक्त आदर्शों पर चला कर सम्पूर्ण मानवजाति के साथ-साथ प्राणिमात्र का कल्याण, में सहयोग के लिए अपने जीवन के एक या अधिक दोषों को त्याग कर और किसी अच्छाई को अपना कर।
10. **वैदिक भौतिकी पर तकनीक एवं गणित का विकास करके** – हमारे वैदिक सैद्धान्तिक भौतिकी को जनोपयोगी बनाने के लिए इसके आधार पर तकनीक एवं गणित का विकास करने का प्रयास करके।
11. **वेद विरोधियों अथवा जिज्ञासुओं को उत्तर देकर** – वेदादि शास्त्रों पर हो रहे मिथ्या आक्षेपों अथवा वास्तविक जिज्ञासुओं को, जो भी आपने अब तक समझा है, के आधार पर उत्तर देकर आचार्य श्री का बहुमूल्य समय बचा सकते हैं।

12. संस्थान के आधार

संरक्षक मण्डल

प्रधान संरक्षक

क्र. सं.	नाम	व्यवसाय
1.	श्री स्वामी वेदानन्द सरस्वती, उत्तरकाशी	वेद प्रचार

संरक्षक

1.	श्री स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, अलीगढ़	वेद प्रचार
2.	श्री आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश, जोधपुर	वेद प्रचार

मानद संरक्षक गण

1.	श्रीमान् अर्जुनसिंह देवड़ा	पूर्व मंत्री, राजस्थान सरकार
2.	श्रीमान् डॉ. समरजीतसिंह	पूर्व विधायक-भीनमाल
3.	श्रीमान् जोगेश्वर गर्ग	विधायक, जालौर
4.	श्रीमान् जीवाराम चौधरी	पूर्व विधायक-साँचोर
5.	श्रीमान् ठा. गोपालसिंह	पूर्व चेयरमेन कॉपरेटिव सो. भीनमाल
6.	श्रीमान् नारायणसिंह देवल	विधायक-रानीवाड़ा
7.	श्रीमान् कुँवर भवानीसिंह	जनप्रतिनिधि एवं समाजसेवी
8.	श्रीमान् ठाकराराम चौधरी	पूर्व जिला प्रमुख, जालोर

संस्थान के पदाधिकारी गण

क्र.सं.	नाम	पद	व्यवसाय
1.	श्री आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक	संस्थापक एवं आजीवन प्रमुख	वेद विज्ञान शोध
2.	सेठ श्री दीनदयाल गुप्ता	उपप्रमुख	उद्योगपति

3.	डॉ. टी.सी. डामोर	मंत्री	पूर्व कुलपति, पूर्व I.P.S.
4.	श्री जनकसिंह चम्पावत	उपमंत्री	स्कूल व्याख्याता
5.	श्री विशाल आर्य	उपाचार्य	वेद विज्ञान शोध
6.	श्री पदमसिंह चौहान	कोषाध्यक्ष	अध्यापक
7.	श्री रमेश सुथार	लेखानिरीक्षक	पटवारी
8.	श्री कमलेश रावल	विधि परामर्शदाता	अति. गवर्नमेंट एडवोकेट
9.	श्री धीराराम चौधरी	जनसम्पर्क प्रमुख	मोटर मैकेनिक
10.	श्री भावाराम चौधरी	पुस्तकालयाध्यक्ष	मोटर व्यापार

न्यासी गण

क्र.सं.	न्यासी नाम तथा स्थान	व्यवसाय
1.	श्री आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक	वेद विज्ञान शोध
2.	श्री ऊकसिंह चौहान, झाब, जालोर	से.नि. अध्यापक
3.	श्री पदमसिंह चौहान, कुशलापुरा, जालोर	अध्यापक
4.	श्री जनकसिंह चम्पावत, जेरण, जालोर	अध्यापक
5.	श्री नटवर नागर, सुमेरपुर	स्टील व्यापार
6.	श्री जितेन्द्रसिंह सिसोदिया, कुचामनसिटी	कॉलेज व्याख्याता
7.	श्री राजेन्द्रसिंह सोढ़ा, तातोल, जालोर	अध्यापक
8.	श्री महेन्द्रसिंह चम्पावत, जेरण, जालोर	अध्यापक
9.	श्री रघुवीरसिंह चौधरी, मथुरा (उ.प्र.)	व्यापार
10.	श्री कमलेश रावल, सुमेरपुर	अति. गवर्नमेंट एडवोकेट
11.	श्री विक्रमसिंह राव, लेटा, जालोर	स्कूल व्याख्याता
12.	श्री धीराराम चौधरी, विशाला, जालोर	मोटर मेकेनिक
13.	डॉ. अमरचन्द आर्य, मथुरा (उ.प्र.)	चिकित्सा, समाजसेवा
14.	श्री सतीश कौशिक, फरीदाबाद (हरि.)	व्यापार

15.	डॉ.चन्द्रशेखर लाहोटी, अजमेर	लिपिक
16.	श्री महात्मा नरेन्द्र देव, आजमगढ़ (उ.प्र)	वेद प्रचार
17.	श्री रमेश सुथार, खाण्डादेवल, जालोर	पटवारी
18.	श्री हुकमसिंह देवड़ा, सुरावा, जालोर	कृषि कार्य
19.	श्री पं.विपिन बिहारी आर्य, मथुरा, (उ.प्र.)	वेद प्रचार
20.	डॉ. मोक्षराज आर्य, अजमेर	शासकीय सेवा, वेद प्रचार
21.	श्रीमती माता प्रकाशदेवी, फरीदाबाद (हरि.)	समाज सेवा
22.	श्री बलवीरसिंह मलिक, फरीदाबाद (हरि.)	समाज सेवा
23.	श्री मांगीलाल सोनी, भीनमाल, जालोर	स्वर्ण व्यापार
24.	श्री पूनमचन्द नागर, अहमदाबाद (गुज.)	समाज सेवा
25.	श्री मनोहरलाल आनन्द, फरीदाबाद (हरि.)	से.नि. अधीक्षण अभि.
26.	श्री जयसिंह गहलोत, जोधपुर (राज.)	पत्थर व्यापार
27.	श्री सुरेशचन्द्र आर्य, अहमदाबाद (गुज.)	उद्योगपति
28.	श्री सोमेन्द्रसिंह गहलोत, जोधपुर	पत्थर व्यापार
29.	श्री किशनलाल गहलोत, जोधपुर	व्यापार
30.	सेठ श्री दीनदयाल गुप्ता, कोलकाता	उद्योगपति
31.	डॉ. वसन्त मदनसुरे, अकोला (महा.)	से. नि. प्रोफेसर
32.	श्री पूर्णाराम आर्य, बीकानेर	सहायक अभियन्ता
33.	श्री महिपालसिंह भाटी, भूण्डवा, जालोर	TVS शोरूम
34.	श्री भावाराम चौधरी, जेतु, जालोर	मोटर व्यापार
35.	श्री शिवकुमार चौधरी, इन्दौर (म.प्र.)	उद्योगपति
36.	डॉ. टी.सी. डामोर, पूर्व I.P.S., उदयपुर	पूर्व कुलपति
37.	श्री विशाल आर्य, वेद विज्ञान मंदिर	वेद विज्ञान शोध
38.	श्री गुलाबसिंह राजपुरोहित, सुमेरपुर	राजकीय सेवानिवृत्त
39.	श्री डूंगराराम दर्जी उर्फ अभिषेक आर्य, निम्बावास, जालोर	व्यापार

सहयोगी संरक्षक गण

क्र.सं.	नाम तथा स्थान
1.	आर्य समाज, सै. 7, फरीदाबाद (हरि.)
2.	श्री विनीत कुमार आर्य (IRS), फरीदाबाद (हरि.)
3.	डॉ. सतेन्द्र कटारीया (भौतिक वैज्ञानिक), जर्मनी
4.	डॉ. संदीप कुमार सिंह (भौतिक वैज्ञानिक), स्वीडन
5.	डॉ. वेदप्रकाश आर्य (सहायक प्रोफेसर भौतिकी), अजमेर
6.	डॉ. राकेश उपाध्याय (उद्योगपति), इन्दौर (म.प्र.)
7.	डॉ. सत्यमित्र आर्य, मथुरा (उ.प्र.)
8.	डॉ. जयदत्त उप्रेती, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)
9.	श्री चौधरी तोरनसिंह आर्य, मथुरा (उ.प्र.)
10.	श्री शिवम मिश्रा, बंगलौर
11.	श्री अनिल कुमार आर्य, फरीदाबाद (हरि.)
12.	श्री जयप्रकाश एन. खानचन्दानी, अहमदाबाद (गुजरात)
13.	श्री राकेश गहलोत, जोधपुर
14.	श्री सुबोधमुनि (के.एस. रामचन्दानी) डीसा (गुजरात)
15.	श्री आचार्य आनन्द पुरूषार्थी, होशंगाबाद (म.प्र.)
16.	श्री मोहब्बतसिंह चौहान, चान्दूर, जालोर
17.	श्री रघुराजसिंह आर्य, बुलन्दशहर (उ.प्र.)
18.	श्री चांदरतन दम्माणी, कोलकाता (प.बं.)
19.	आर्य समाज, सुमेरपुर
20.	श्री रामसिंह आर्य (अध्यापक), पानीपत (हरि.)
21.	श्रीमती किरणदेवी गहलोत, जोधपुर
22.	श्रीमती उषा सेठी, फरीदाबाद (हरि.)
23.	श्री रणजीत कुमार (J.En.), समस्तिपुर (बिहार)
24.	श्री सुभाष गहलोत, जोधपुर
25.	श्री बी.एल. सुथार, (पूर्व अधीक्षण अभियन्ता), जालोर
26.	श्री सुरेन्द्र राघव, अलीगढ़ (उ.प्र.)
27.	श्री आकाश पाण्डेय, जौनपुर (उत्तर प्रदेश)

28.	श्री मोहनलाल चौधरी, जुनीबाली, जालोर
29.	श्री नैनाराम चौहान (इंजीनियर), भीनमाल
30.	श्री आनन्द कुमार आर्य, टाण्डा, अम्बेडकरनगर (उ.प्र.)
31.	श्री देवेन्द्रार्य (डूंगराराम चौधरी), नया चैनपुरा, जालोर
32.	श्री किशनलाल जीनगर, भीनमाल
33.	श्री अनुज राठी, सहारनपुर (उ.प्र.)
34.	श्री जितेन्द्र चौहान, पटियाला (पंजाब)
35.	श्रीमती शान्ति देवी रामकलोवन, ठाणे (महाराष्ट्र)
36.	श्री महिपाल सिंह राव (अध्यापक), भीनमाल
37.	श्री अमृतभाई पटेल, नवसारी (गुजरात)
38.	श्री जयपाल आर्य, बबेरू, बांदा (उ.प्र.)
39.	श्री जगतपाल सिंह चौहान, झाब, जालोर

कार्मिकों का विवरण

क्र.सं.	**नाम**	**योग्यता**	**पद**
1.	श्री विशाल आर्य	M.Sc. Physics	उपाचार्य
2.	श्री विक्रम सिंह चौहान	B.A.	व्यवस्थापक
3.	श्री सुमित कुमार शास्त्री	साहित्याचार्य	कार्यालय प्रमुख
4.	श्री नेथी राम चौधरी	M.A. (Hindi), B.Ed.	प्रूफ रीडर एवं लेखन सहायक
5.	श्री पारस सोलंकी	Diploma ME	सोशल मीडिया सहायक
6.	श्री रघुवीर सिंह चौहान	B.A.	सुरक्षा प्रहरी एवं वाहन चालक
7.	श्री रजींत सिंह चौहान	12^{th}	सुरक्षा प्रहरी एवं व्यवस्था सहायक
8.	श्री मूलदास वैष्णव	उच्च प्राथमिक	सहायक कर्मचारी

13. विनम्र निवेदन

मान्यवर! आपने आचार्य जी के कार्य और महत्ता को भली प्रकार समझ लिया होगा, ऐसी आशा करते हैं। यदि आपके हृदय और मस्तिष्क वेद के इस अपूर्व कार्य के लिए उत्सुक हुए हों और हमें अपना सहयोग करना चाहें, तो आप हमारे यज्ञ में निम्न प्रकार से सहयोगी बन सकते हैं–

1. प्रतिवर्ष न्यूनतम 12,000/– रूपये अथवा एक बार न्यूनतम एक लाख रुपये का दान करके सहयोगी संरक्षक बन सकते हैं। आपको न्यास की वार्षिक बैठक में, जो प्रायः वार्षिकोत्सव के अवसर पर हुआ करेगी, में विशेष अतिथिरूपेण आमन्त्रित किया जाता रहेगा।
2. प्रतिवर्ष न्यूनतम 6,000/– रूपये अथवा एक साथ न्यूनतम 50,000/– रूपये देकर विशेष आमन्त्रित सदस्य बन सकते हैं। आपको भी वार्षिक बैठक के अवसर पर अतिथि रूपेण आमन्त्रित किया जाता रहेगा।
3. वार्षिक न्यूनतम 1,000/– रूपये अथवा एक सौ मासिक देते रहकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं।

नोट– उपर्युक्त सभी सहयोगी महानुभावों को न्यास की C.A. द्वारा की हुई वार्षिक ऑडिट रिपोर्ट भेजी जाया करेगी। जो महानुभाव स्वयं दान नहीं कर सकें, वे दूसरों को प्रेरित करके कम से कम 8 सदस्य आदि बनाकर स्वयं निःशुल्क उसी श्रेणी के सदस्य वा सहयोगी संरक्षक आदि बन सकते हैं।

4. वयोवृद्ध विद्वान्, संन्यासी, साधु, महान् वैज्ञानिक महानुभाव अपना आशीर्वाद तथा बौद्धिक सहयोग दे सकते हैं।
5. विद्यार्थी, किसान, श्रमिक, व्यापारी आदि अपनी पवित्र आहुति श्रद्धा व सामर्थ्य के अनुसार सहयोग कर सकते हैं।

14. विशेष निवेदन

यह कार्य अत्यन्त पवित्र है, इस कारण आचार्य श्री की भावनानुसार विनम्र निवेदन है कि **जिनकी आजीविका किसी भी प्रकार की हिंसा, चोरी, तस्करी, अश्लीलतावर्धक साधनों, नशीली वस्तुओं की विक्री, धोखाधड़ी, शोषण आदि पर निर्भर हो तथा जो निर्धन भाई अपनी सामर्थ्य से अधिक (अथवा अपने परिवार में क्लेश करके) दान देना चाहते हों, ऐसे महानुभावों की सद्भावना का धन्यवाद करते हुए भी हम उनका दान लेने में असमर्थ हैं। कृपया ऐसा करने का प्रस्ताव करके हमें लज्जित न करें। हाँ, जो बन्धु ऐसे कर्मों को त्यागकर हमसे जुड़ना चाहें, तो उनका हार्दिक स्वागत है।**

Bank Name	**Punjab National Bank**
A/c Holder	Shri Vaidic Swasti Pantha Nyas
A/c Number	4474000100005849
Branch	Bhinmal
IFS Code	PUNB0447400

या

Bank Name	**State Bank of India**
A/c Holder	Shri Vaidic Swasti Pantha Nyas
A/c Number	61001839825
Branch	Khari Road, Bhinmal
IFS Code	SBIN0031180

आप अपना चैक/ड्राफ्ट/धनादेश, **''श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास''** PAN No. AAATV7229A के नाम (केवल खाते में देय) भेजने का कष्ट करें, साथ ही अपना नाम व पता साफ अक्षरों में लिखकर अवश्य भेजने की कृपा करें। **आप ऑनलाइन भी धन जमा करवा सकते हैं** परन्तु ऐसा करने वाले **महानुभाव अपना नाम व**

पता दूरभाष द्वारा तत्काल सूचित करने का कष्ट करें, जिससे समय पर रसीद भेजी जा सके, अन्यथा हमें बहुत कठिनाई होती है।

नोट– न्यास को दिया हुआ दान आयकर अधिनियम 1961 **की धारा** 80**-जी के अन्तर्गत कर मुक्त है।**

shrivspnyas@upi

अब आप वैदिक विज्ञान के पुनरूत्थान के लिए दान Online भी दे सकते हैं।
www.vaidicphysics.org

तिथि ज्येष्ठ शुक्ला अष्टमी विक्रम सम्वत् 2075, दिनांक 20, जून 2018 उपराष्ट्रपति आवास पर 'वेदविज्ञान-आलोकः' ग्रन्थ का विमोचन करते हुए महामहिम उपराष्ट्रपति श्रीमान् एम. वेंकैया नायडू जी

दिनांक 9/10/2011 को अन्तर्राष्ट्रिय ख्यातिर्लब्ध खगोल वैज्ञानिक प्रो. आभास कुमार मित्रा एवं प्रख्यात खगोल वैज्ञानिक प्रो. ए. आर. राव अनुसंधान भवन का उद्घाटन करते हुए

@VaidicPhysics

सर्व ज्ञान विज्ञान ज्योतिः

वेद

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास

श्री आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
वैदिक वैज्ञानिक
(संस्थापक एवं आजीवन प्रमुख)

श्री दीनदयाल गुप्ता
चेयरमैन, डॉलर फाउण्डेशन
(उपप्रमुख, न्यास)

डॉ. टी.सी. डामोर
पूर्व कुलपति, पूर्व I.P.S.
(मंत्री, न्यास)

श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
(वरिष्ठ न्यासी)

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास

वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम